श्री लाल बाहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

अन्ताराष्ट्रीया संगोष्ठी
INTERNATIONAL SEMINAR

संस्कृतविश्वविद्यालय-पुस्तकालययोः परिप्रेक्ष्ये
ज्ञानसर्जन संचार संरक्षणेषु नवोन्मेषः

Innovative approach in knowledge Creation, Communication and Preservation: Perspective from Sanskrit Universities and Libraries

30th to 31st October, 2023

अमृतकाल–स्मारिका
(Amrit kaal-Souvenir)

Organised by

Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University
New Delhi

In Collaboration with

Central Sanskrit University, New Delhi

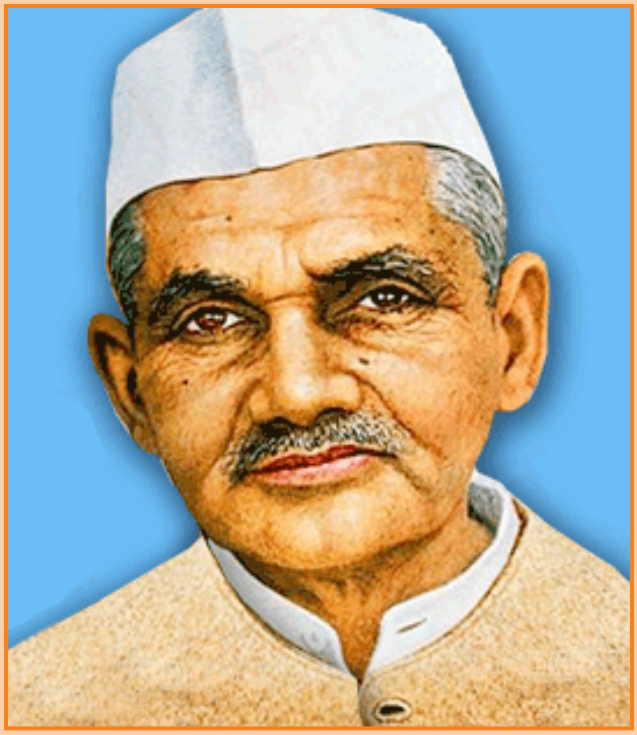

श्री लाल बहादुर शास्त्री

कुलाध्यक्ष
भारत के महामहिम राष्ट्रपति

श्रीमती द्रौपदी मुर्मू

International Seminar

On

Innovative Approach in Knowledge Creation, Communication and Conservation: Perspectives from Sanskrit Universities and Libraries

संस्कृतविश्वविद्यालय-पुस्तकालययो: परिप्रेक्ष्ये ज्ञानसर्जन-संचार-संरक्षणेषु नवोन्मेष:

संस्कृत विश्वविद्यालय एवं पुस्तकालयों के परिप्रेक्ष्य में ज्ञान सर्जन, संचार एवं संरक्षण में नवोन्मेष।

Organised by

Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University, New Delhi

In Collaboration with

Central Sanskrit University, New Delhi

30-31 October, 2023

At 10 am to 5:30 pm

Registration

Last Date 29.10.2023

Important Dates

Submission of full paper

22 October, 2023

Acceptance of paper

27 October, 2023

Contacts

011-46060531/532/533

Email: is2023.lnsu@gmail.com

गिरिराज सिंह
GIRIRAJ SINGH

सत्यमेव जयते

ग्रामीण विकास तथा पंचायती राज मंत्री
भारत सरकार
कृषि भवन, नई दिल्ली
MINISTER OF
RURAL DEVELOPMENT AND PANCHAYATI RAJ
GOVERNMENT OF INDIA
KRISHI BHAWAN, NEW DELHI

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष व प्रसन्नता है कि श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली एवं केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में संस्कृत विश्वविद्यालय-पुस्तकालययोः परिप्रेक्ष्ये ज्ञानसर्जन-संचारसंरक्षणेषु नवोन्मेषः (Innovative approach in knowledge creation, communication and conservation Perspectives from Sanskrit Universities and Libraries) विषय पर दिनांक 30 एवं 31 अक्टूबर 2023 को द्वि-दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन तथा स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। आशा है कि स्मारिका में दी जाने वाली जानकारी समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए ज्ञानवर्धक तथा उपयोगी होगी।

मैं संगोष्ठी के सफलतापूर्वक आयोजन एवं स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

सादर,

भवदीय,

(गिरिराज सिंह)

डॉ. महेन्द्र नाथ पाण्डेय
Dr. Mahendra Nath Pandey

मंत्री
भारी उद्योग मंत्रालय
भारत सरकार
MINISTER
MINISTRY OF HEAVY INDUSTRIES
GOVERNMENT OF INDIA

दिनांक -25.10.2023

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली और केन्द्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में **"संस्कृतविश्वविद्यालय-पुस्तकालययोः परिप्रेक्ष्ये ज्ञानसृजन, ज्ञानसर्जन-संचार-संरक्षणेषु नवोन्मेषी दृष्टि"** (Innovative approach in knowledge Creation, Communication and Preservation: Perspective from Sanskrit Universities and Libraries) विषय पर द्वि-दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। आशा है कि स्मारिका में दी जाने वाली जानकारी समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए ज्ञानवर्धक तथा उपयोगी होगी।

मैं संगोष्ठी के सफलतापूर्वक आयोजन एवं स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

भवदीय

(डॉ० महेन्द्र नाथ पाण्डेय)

कार्यालय: कक्ष सं. 176, 'ई' विंग, प्रथम तल, उद्योग भवन, नई दिल्ली-110 011, दूरभाष : 91-11-23061782, फैक्स : 91-11-23062552
Office : Room No. 176, 'E' Wing, 1st Floor, Udyog Bhawan, New Delhi-110 011, Phone : 91-11-23061782, Fax : 91-11-23062552
निवास / Residence : 9, त्यागराज मार्ग, नई दिल्ली-110 011 / 9, Tyagraj Marg, New Delhi-110 011
दूरभाष / Phone : 91-11-23018556, 23018558, ई-मेल / E-mail : drmnpandeymp@gmail.com

अन्नपूर्णा देवी
ANNPURNA DEVI

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

राज्य मंत्री
शिक्षा मंत्रालय
भारत सरकार
MINISTER OF STATE
FOR EDUCATION
GOVERNMENT OF INDIA

27 OCT 2023

संदेश

हमें यह जानकर अति प्रसन्नता है कि श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली और केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 30-31 अक्तूबर, 2023 को दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हो रहा है जिसका शीर्षक **"संस्कृत विश्वविद्यालय एवं पुस्तकालयों के परिपेक्ष्य में ज्ञान सृजन, संचार एवं संरक्षण में नवोन्मेषी दृष्टि"** है।

किसी भी समाज और देश की प्रगति के लिए ज्ञान एक शक्ति पुंज है जिसके सहारे चतुर्दिक प्रगति एवं समग्र विकास के द्वार खुलते हैं। भारत जैसे अति प्राचीन एवं सांस्कृतिक रूप से सर्वाधिक समृद्ध देश में ज्ञान-विज्ञान के सृजन, संचार, संरक्षण एवं संवर्धन की अति प्रसिद्ध परम्पराएं रही हैं। वेद, उपनिषद, पुराण तथा वेद आधारित विभिन्न ग्रंथों स्थित ज्ञान-विज्ञान के भंडार को हमें आधुनिक तकनीकों का उपयोग करके उसे संरक्षित करने की आवश्यकता है, आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के साथ उसके समायोजन की आवश्यकता है तथा संचार माध्यमों के द्वारा उस ज्ञान को सर्व सुलभ बनाने की आवश्यकता है। पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित करने और इसे जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए लोकप्रिय रणनीति विकास करने की आवश्यकता है। पारंपरिक अथाह ज्ञान के भंडार को संरक्षित, संवर्धित एवं संप्रेषित करने में देश के संस्कृत विश्वविद्यालयों की महती भूमिका है। भारत सरकार द्वारा घोषित **'राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020'** हर छात्र में भारतीय ज्ञान परंपरा एवं भारतीय मूल्यों को आत्मसात करने के लिए द्वार खोलती है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि इस अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में देश – विदेश से आये हुए विद्वतजन ज्ञान सृजन तथा ज्ञान के संचार एवं संरक्षण के विभिन्न आयामों पर गहन रूप से मन्थन करेंगे और ऐसे निष्कर्ष निकालेंगे जो मील के पत्थर साबित होंगे जिनसे इस दिशा में दूरगामी सकारात्मक परिणाम मिल सकेंगे।

मैं संगोष्ठी के आयोजकों को साधुवाद देती हूं तथा संगोष्ठी की भव्य सफलता की कामना करती हूँ।

(अन्नपूर्णा देवी)

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

Office : Room No. 126, 'C' Wing, Shastri Bhavan, New Delhi-110 001
Phone : 91-11-23384073, 23386163, Fax : 91-11-23385112
E-mail : mosedu-ad@gov.in

अश्विनी कुमार चौबे
Ashwini Kumar Choubey

राज्य मंत्री
पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन
उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण
भारत सरकार
MINISTER OF STATE
ENVIRONMENT, FOREST AND CLIMATE CHANGE
CONSUMER AFFAIRS, FOOD & PUBLIC DISTRIBUTION
GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता है कि श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली एवं केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में '**संस्कृतविश्वविद्यालय - पुस्तकालययोः परिप्रेक्ष्ये ज्ञानसर्जन-संचार-संरक्षणेषु नवोन्मेषः दृष्टिः संस्कृत विश्वविद्यालय एवं पुस्तकालयों के परिप्रेक्ष्य में ज्ञान सृजन, संचार एवं संरक्षण में नवोन्मेषी दृष्टि**' विषय पर दिनांक 30 एवं 31 अक्टूबर 2023 को द्वि-दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन तथा स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। आशा है कि स्मारिका में दी जाने वाली जानकारी समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए ज्ञानवर्धक तथा उपयोगी होगी।

मैं संगोष्ठी के सफलतापूर्वक आयोजन एवं स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

आपका

(अश्विनी कुमार चौबे)

प्रो0 मुरलीमनोहर पाठक
कुलपति
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
बी – 04, कुतुब इंस्टिट्यूशनल एरिया
नई दिल्ली - 110016

कार्यालय : 5वां तल, आकाश विंग, इंदिरा पर्यावरण भवन, जोर बाग रोड, नई दिल्ली-110003, दूरभाष: 011-20819418, 011-20819421, फैक्स: 011-20819207, ई-मेल : mos.akc@gov.in
Office : 5th Floor, Aakash Wing, Indira Paryavaran Bhawan, Jor Bagh Road, New Delhi-110003, Tel.: 011-20819418, 011-20819421, Fax : 011-20819207, E-mail : mos.akc@gov.in
कार्यालय: कमरा नं.173, कृषि भवन, नई दिल्ली-110001, दूरभाष: 011-23380630, फैक्स: 011-23380632
Office : Room No. 173, Krishi Bhawan, New Delhi-110001, Tel. : 011-23380630, Fax : 011-23380632
निवास: 30, डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम रोड़, नई दिल्ली-110003, दूरभाष: 011-23794971, 23017049
Residence : 30, Dr. APJ Kalam Road, New Delhi-110003, Tel.: 011-23794971, 23017049

लक्ष्मण प्रसाद आचार्य
Lakshman Prasad Acharya

सत्यमेव जयते

राज्यपाल सिक्किम
GOVERNOR OF SIKKIM

राज भवन
गान्तोक–737103
(सिक्किम)
RAJ BHAVAN
GANGTOK-737103
(SIKKIM)

SKM/GOV/MESG/2023/852
18th October, 2023

शुभकामना संदेश

यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय और केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वधान में "संस्कृतविश्वविद्यालय पुस्तकालययो: परिप्रेक्ष्ये ज्ञानसर्जन-संचार-संरक्षणेषु नवोन्मेषी दृष्टि" विषयक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हो रहा है जिसका मुख्य उद्देश्य संस्कृत शिक्षा में नवाचार और तकनीकी समावेशन की नवाचारी दृष्टि को प्रोत्साहित करना है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस संगोष्ठी में हुए मंथन के माध्यम से नवोन्मेषी दृष्टिकोण के साथ ज्ञान सर्जन, संचार और संरक्षण के लिए एक नवाचार होगा और निश्चित रूप से नई शिक्षा नीति और तकनीकी के समावेशन के बारे में महत्वपूर्ण चर्चा होगी, और संस्कृत शिक्षा को एक नई दिशा में ले जाने के लिए यह महत्वपूर्ण कदम होगा।

सभी श्रेष्ठ विद्वानों की उपस्थिति में यह सम्मेलन सफल हो, और संस्कृत के नवाचार के क्षेत्र में नए मार्ग प्रशस्त हो इसके हेतु शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

पुन: शुभकामनाओं सहित !

लक्ष्मण आचार्य

(लक्ष्मण प्रसाद आचार्य)

विजय कुमार सिन्हा
नेता, विरोधी दल,
बिहार विधान सभा,
पटना-15

VIJAY KUMAR SINHA
LEADER OF OPPOSITION
BIHAR VIDHAN SABHA
PATNA-15

दिनांक- 24/10/2023

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली और केन्द्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में **"संस्कृतविश्वविद्यालय-पुस्तकालययोः परिप्रेक्ष्ये ज्ञानसृजन, ज्ञानसर्जन-संचार-संरक्षणेषु नवोन्मेषी दृष्टि"** (Innovative approach in knowledge Creation, Communication and Preservation: Perspective from Sanskrit Universities and Libraries) विषय पर द्वि-दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। आशा है कि स्मारिका में दी जाने वाली जानकारी समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए ज्ञानवर्धक तथा उपयोगी होगी।

मैं संगोष्ठी के सफलतापूर्वक आयोजन एवं स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(विजय कुमार सिन्हा)

Mob. 9431011811, 9473400218
Email id- vksmla@gmail.com Website- Vijaykumarsinha.com

Former -
- Chairman of University Grants Commission
- Vice-Chancellor of Banaras Hindu University
- Vice-Chancellor of King George's Medical University
- President, National Academy of Medical Sciences
- President, Mahatma Gandhi University of Medical Sciences
- Chancellor of KIIT University

Recipient, BC Roy National Award – An Eminent Medical Man

Dr. HARI GAUTAM
MS FRCS (EDIN) FRCS (ENG) FAMS
FACS FICS FIACS DSc (HON CAUSA)
Principal Advisor
Mahatma Gandhi University of
Medical Sciences & Technology
Sitapura, Jaipur – 302 022
Mob. : **09829116869**, 09818096502
E-mail : **drgautamhari@gmail.com**

दिनांक: 27 अक्टूबर 2023

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष एवं प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली और केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में **"संस्कृतविश्वविद्यालय–पुस्तकालययोः परिप्रेक्ष्ये ज्ञानसर्जन–संचार–संरक्षणेषु नवोन्मेषः"** *(Innovative approach in knowledge Creation, Communication and Preservation: Perspective from Sanskrit Universities and Libraries)* विषयक पर दो–दिवसीय अन्तरर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 30–31 अक्टूबर, 2023 को किया जा रहा है। इस अवसर पर एक स्मारिका का भी विमोचन किया जा रहा है।

मैं, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, छात्र–छात्राओं, प्रतिभागियों एवं आयोजकों को साधुवाद देते हुये संगोष्टी के सफल आयोजन की कामना करता हूँ।

पुनः शुभकामनाओं एवं आशीर्वाद सहित।

डॉ. हरी गौत्तम

कुलाधिपति
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

JUSTICE DR. MUKUNDAKAM SHARMA
FORMER JUDGE, SUPREME COURT OF INDIA
FORMER CHAIRMAN, VANSADHARA WATER DISPUTES TRIBUNAL
FORMER CHIEF JUSTICE OF DELHI HIGH COURT
FORMER CHANCELLOR, LAL BAHADUR SHASTRI NATIONAL SANSKRIT UNIVERSITY, NEW DELHI

Message

It is heartening to note that an International Seminar on the subject of "Innovative approach in Knowledge Creation, Communication and Conservation: Perspective from Sanskrit Universities and libraries" is being organised by Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University in collaboration with Central Sanskrit University, New Delhi. The use and role of the Libraries in imparting education and in knowledge creation in the Sanskrit Universities has always received topmost priority.

I am confident that this International Seminar which is being held spreading over full two days and consisting of very many important and relevant sub themes like Indian Knowledge System, Conservation and Preservation of Sanskrit etc. would enable to throw new light and better perspective of our knowledge system, our heritage and our rich culture grounded on our enriching Vedic and Classical Sanskrit Literature, of which we are all proud of. Sanskrit Universities and their Libraries preserve, subserve and create many ideas and dimensions for developing quality education in Sanskrit.

We all look forward to a very creative discussion and fruitful deliberation in the Seminar which should be recorded and when so done would definitely enrich all of us who are proud of our rich and ancient culture and heritage.

I hope and trust that this Seminar would be a thumping success.

Date: 27th October, 2023

(JUSTICE DR. MUKUNDAKAM SHARMA)

B-1/39, Safdarjung Enclave, Ch. Jhandu Singh Marg, New Delhi-110029
Mobile: 9818000190 I Email : mukundakam@gmail.com

प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः
कुलपतिः
Prof. Murlimanohar Pathak
Vice-Chancellor

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)
'ए' ग्रेड (नैक)
बी-4, कुतुबसांस्थानिकक्षेत्रम्, नवदेहली-110 016 (भारत)

Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University
(Central University)
'A' Grade (NAAC)
B-4, Qutub Institutional Area, New Delhi-110 016 (INDIA)

पत्र संख्या-लाबशा./वी.सी.2023/ ४४ दिनांक : 20.10.2023

प्ररोचना

यह हम सब के लिए अत्यन्त प्रसन्नता एवं गर्व का विषय है कि श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली एवं केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 30 व 31.10.2023 को "संस्कृतविश्वविद्यालय-पुस्तकालययोः परिप्रेक्ष्ये ज्ञानसर्जन-संचार-संरक्षणेषु नवोन्मेषः (Innovative approach in knowledge creation Communication and Conservation: Perspectives from Sanskrit Universities and Libraries)" विषयक दो दिवसीय अन्ताराष्ट्रिय संगोष्ठी का आयोजन श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के परिसर में किया जा रहा है।

इस संगोष्ठी में भारतीय ज्ञान परम्परा, संस्कृत धरोहर का संरक्षण-रखरखाव, राष्ट्रीय शिक्षा नीति के परिप्रेक्ष्य में संस्कृत शिक्षा, शोध एवं पुस्तकालय, संस्कृत पुस्तकालयों में तकनीकी अन्तर्वेशन, संस्कृत विश्वविद्यालय में शोध-प्रकाशन के परिप्रेक्ष्य में नैतिकता, संस्कृत पुस्तकालयों के नेटवर्किंग, संसाधन साझेदारी एवं भविष्यगत रूपरेखा इत्यादि विषयों पर देश-विदेश के अनेक मर्मज्ञ विद्वान् संस्कृत, हिंदी एवं अंग्रेजी भाषा में अपने वक्तव्य प्रस्तुत करेंगे। इस अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सन्दर्भ में संस्कृत शिक्षा एवं ग्रन्थालय में तकनीक समावेशन एवं नवोन्मेषी दृष्टिकोण सम्बन्धित विभिन्न आयोमों पर परिचर्चा के अन्तर्गत संस्कृत शिक्षा एवं शोध को एक नई दृष्टि प्राप्त होगी, साथ ही साथ संस्कृत एवं अन्य भाषा के ग्रन्थालयों में आधुनिक तकनीकी के समावेश को गति मिलेगी।

विश्वविद्यालय द्वारा इस संगोष्ठी में प्रतिभाग करने वाले विद्वानों द्वारा प्रस्तुत शोध-पत्रों का प्रकाशन किया जायेगा। इस अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका में प्रकाशित लेख उपयोगी होने के साथ-साथ अनुसंधान में भी नई पीढ़ी का मार्गदर्शन करेंगे।

मैं परमपिता परमात्मा से इस विशिष्ट अन्तर्राष्ट्रिय संगोष्ठी की सफलता की कामना करता हूँ और प्रकाशित होने वाली स्मारिका के सम्पादन एवं प्रकाशन में अथक सहयोग व परिश्रम करने वाले सभी सहयोगियं को हार्दिक बधाई देता हूँ।

20.10.2023
(मुरलीमनोहर पाठक)

Ph. : 011-26851253, 26564003
E-mail : profmpathak@gmail.com, vcslbsrsv@yahoo.co.in, vc@slbsrsv.ac.in

प्रो. श्रीनिवास वरखेड़ी
कुलपतिः
केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः
संसदः अधिनियमेन स्थापितः
(प्राक्तनं राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्,
भारतसर्वकारस्य शिक्षामन्त्रालयाधीनम्)

Prof. Shrinivasa Varakhedi
Vice-Chancellor
Central Sanskrit University
Established by an Act of Parliament
(Formerly Rashtriya Sanskrit Sansthan,
Under Ministry of Education, Govt. of India)

के.सं.वि./कुलपति-101/2023-24/३५०

दिनाङ्क - 28.10.2023
6 कार्तिक-1945

आज़ादी का अमृत महोत्सव

शुभकामना संदेश

अत्यन्त ही हर्ष का विषय है कि केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली एवं श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में द्विदिवसीय अन्तराराष्ट्रियसंगोष्ठी का आयोजन दिनांक 30.10.2023 से 31.10.2023 तक श्री लालबहादुरशास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, कटवारिया सराय, नई दिल्ली के केन्द्रीय ग्रन्थालय में होने जा रहा है।

'संस्कृत विश्वविद्यालय एवं पुस्तकालय के परिप्रेक्ष्य में ज्ञान-सर्जन-संचार एवं संरक्षण में नवोन्मेष' विषय पर आधारित इस संगोष्ठी के आयोजन से निश्चित ही संस्कृत विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में नवाचारों का आगमन होगा, ऐसी मेरी मंगलकामना है। संगोष्ठी में प्रतिभागिता करने वाले पुस्तकालय के प्राणभूत पुस्तकालय कर्मियों/अधिकारियों के लिये पुस्तकालयीय क्षेत्र के मूर्धन्य विद्वानों का उद्बोधन निश्चित ही लाभकारी सिद्ध होगा।

मैं इस संगोष्ठी की सफलता के लिये हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(प्रो. श्रीनिवास वरखेड़ी)
कुलपति

56-57, सांस्थानिकक्षेत्रम्, जनकपुरी, नवदेहली - 110058
56-57, Institutional Area, Janakpuri, New Delhi - 110058 (INDIA)
Ph. No.: (O) 011-28523949, EPABX : 28524993, 28521994, 28524995
EMAIL : vicechancellorcsu@gmail.com / vc@csu.co.in, WEBSITE : www.sanskrit.nic.in

डा0 सुखबीर सिंह सन्धु
Dr. Sukhbir Singh Sandhu

मुख्य सचिव
Chief Secretary

उत्तराखण्ड शासन
Government of Uttarakhand
नेताजी सुभाष चन्द्र बोस भवन
Netaji Subhash Chandra Bose Bhawan
राज्य सचिवालय, देहरादून
Civil Secretariat, Dehradun
Phone (Off.) 0135-2712100, 2712200
(Fax) 0135-2712500
E-mail : cs-uttarakhand@nic.in
chiefsecyuk@gmail.com

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली एवं केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में संस्कृतविश्वविदयालय-पुस्तकालययोः परिप्रेक्ष्ये ज्ञानसर्जन-संचारसंरक्षणेषु नवोन्मेषः (Innovative approach in knowledge Creation, Communication and Preservation: Perspective from Sanskrit Universities and Libraries) विषय पर दिनांक 30 एवं 31 अक्टूबर, 2023 को अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन तथा स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। इसके लिए संगोष्ठी के आयोजक एवं स्मारिका के संपादक मण्डल बधाई के पात्र हैं।

मैं संगोष्ठी के सफल आयोजन एवं स्मारिका के सुरूचिपूर्ण प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं व्यक्त करता हूँ।

(डॉ0 एस0 एस0 सन्धु)

गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय

(भारत की संसद के अधिनियम सं. 25, 2009 के अंतर्गत स्थापित)

CENTRAL UNIVERSITY OF GUJARAT

(Established by an Act of Parliament of India, No 25 of 2009)

Dr. Rama Shanker Dubey
Vice Chancellor

Phone: 9415992028

दिनांक – 23/10/2023

शुभकामना सन्देश

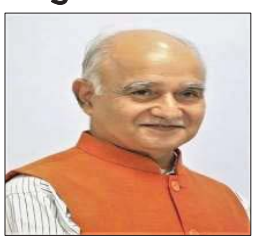

हमें यह जानकर अति प्रसन्नता है कि श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली और राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय नयी दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 30-31 अक्टूबर 2023 को दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हो रहा है जिसका शीर्षक है "संस्कृत विश्वविद्यालय एवं पुस्तकालयों के परिपेक्ष्य में ज्ञान सृजन, संचार एवं संरक्षण में नवोन्मेषी दृष्टि"।

किसी भी समाज और देश की प्रगति के लिए ज्ञान एक शक्ति पुंज है जिसके सहारे चतुर्दिक प्रगति एवं समग्र विकास के द्वार खुलते हैं। भारत जैसे अति प्राचीन एवं सांस्कृतिक रूप से सर्वाधिक समृद्ध देश में ज्ञान विज्ञान के सृजन, संचार, संरक्षण एवं संवर्धन की अति प्रसिद्ध परम्पराएँ रहीं हैं। वेद, उपनिषद, पुराण तथा वेद आधारित विभिन्न ग्रंथों में स्थित ज्ञान-विज्ञान के भंडार को हमें आधुनिक तकनीकों का उपयोग करके उसे संरक्षित करने की आवश्यकता है, आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के साथ उसके समायोजन की आवश्यकता है तथा संचार माध्यमों के द्वारा उस ज्ञान को सर्व सुलभ बनाने की आवश्यकता है । पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित करने और इसे जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए लोकप्रिय रणनीति विकास करने की आवश्यकता है । पारंपरिक अथाह ज्ञान के भंडार को संरक्षित, संवर्धित एवं संप्रेषित करने में देश के संस्कृत विश्वविद्यालयों की महती भूमिका है । भारत सरकार द्वारा घोषित 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020' हर छात्र में भारतीय ज्ञान परंपरा एवं भारतीय मूल्यों को आत्मसात करने के लिए द्वार खोलती है । हमें पूर्ण विश्वास है कि इस अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में देश –

सेक्टर - 29, गांधीनगर - 382030, गुजरात, दूरभाष : 8130633366

Sector-29, Gandhinagar- 382030, Gujarat, Mobile : 8130633366

e-mail: chancellor@cug.ac.in & adhia03@hotmail.com Website: www.cug.ac.in

गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय

(भारत की संसद के अधिनियम सं. 25, 2009 के अंतर्गत स्थापित)

CENTRAL UNIVERSITY OF GUJARAT

(Established by an Act of Parliament of India, No 25 of 2009)

Dr. Rama Shanker Dubey
Vice Chancellor

Phone: 9415992028

विदेश से आये हुए विद्वतजन ज्ञान सृजन तथा ज्ञान के संचार एवं संरक्षण के विभिन्न आयामों पर गहन हमें पूर्ण विश्वास है कि इस अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में देश – विदेश से आये हुए विद्वतजन ज्ञान सृजन तथा ज्ञान के संचार एवं संरक्षण के विभिन्न आयामों पर गहन रूप से मन्थन करेंगे और ऐसे निष्कर्ष निकालेंगे जो मील के पत्थर साबित होंगें जिनसे इस दिशा में दूरगामी सकारात्मक परिणाम मिल सकेंगें ।

मैं संगोष्ठी के आयोजकों को साधुवाद देता हूँ तथा संगोष्ठी की भव्य सफलता की कामना करता हूँ ।

रमाशंकर दूबे

गांधीनगर, गुजरात
22 अक्टूबर, 2023

रमाशंकर दूबे
कुलपति

सेक्टर - 29, गांधीनगर - 382030, गुजरात, दूरभाष : 8130633366
Sector-29, Gandhinagar- 382030, Gujarat, Mobile : 8130633366
e-mail: chancellor@cug.ac.in & adhia03@hotmail.com Website: www.cug.ac.in

प्रो. साकेत कुशवाहा
कुलपति
Prof. Saket Kushwaha
Vice Chancellor

राजीव गाँधी विश्वविद्यालय
केंद्रीय विश्वविद्यालय
रोनोहिल्स,दोइमुख- ७९१ ११२
अरुणाचल प्रदेश, भारत
Rajiv Gandhi University
Central University
Rono Hills, Doimukh – 791 112
Arunachal Pradesh, India

शुभकामना सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष व प्रसन्नता है कि श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली एवं केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में संस्कृत विश्वविद्यालय-पुस्तकालययोः परिप्रेक्ष्ये ज्ञानसर्जन-संचारसंरक्षणेषु नवोन्मेषः(Innovative approach in knowledge creation, communication and conservation: Perspectives from Sanskrit Universities and Libraries.) विषय पर दिनांक 30 एवं 31 अक्टूबर 2023 को द्वि-दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन तथा स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। इस महत्वपूर्ण विषय पर संगोष्ठी के आयोजन का संकल्प निश्चय ही सराहनीय है। जिसके लिए संगोष्ठी के आयोजक और स्मारिका का सम्पादक मण्डल विशेष रूप से बधाई का पात्र है। मैं आशा करता हूँ कि संगोष्ठी में उपस्थित विद्वतजनों द्वारा इस विषय पर व्यक्त किये गये महत्वपूर्ण विचारों से जनमानस व शिक्षार्थी अवश्य ही लाभान्वित होंगे। प्रकाश्य स्मारिका में समाहित मूर्धन्य साहित्यकारो विद्वान व नवोदित रचनाकारों के सारगर्भित व शोधपूर्ण आलेख व रचनाएं पाठकों, शिक्षार्थियों व शोधार्थियों का ज्ञानवर्धन और मार्गदर्शन करने के साथ-साथ उनके बौद्धिक विकास में सहायक होंगी, ऐसा मेरा विश्वास है। मेरी शुभकामना है कि आपका यह सत्यप्रयास पूर्ण रूप से सफल हो।

संगोष्ठी के सफलतापूर्वक आयोजन एवं स्मारिका के सुरुचिपूर्ण प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

साकेत कुशवाहा

दूरभाषः/Tel: +91-360-2277252 (Off.) 2277261 (आवास/Resi.) +91-9936451995 (M), फैक्सः/Fax: +91-360-2277317
ईमेलः/E-mail: saket.kushwaha@rgu.ac.in/vc@rgu.ac.in वेबसाइटः/Website: www.rgu.ac.in

प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल
कुलपति
Prof. Alok Kumar Chakrawal
Vice-Chancellor

गुरू घासीदास विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
बिलासपुर-495009, छत्तीसगढ़ (भारत)
Guru Ghasidas Vishwavidyalaya
(A Central University)
Bilaspur - 495009, Chhattisgarh (India)

24 अक्टूबर, 2023

–:: शुभकामना सन्देश ::–

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के सहयोग से श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के द्वारा ''संस्कृत विश्वविद्यालय एवं पुस्तकालयों के परिप्रेक्ष्य में ज्ञान सर्जन, संचार एवं संरक्षण में नवोन्मेष'' विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन 30–31 अक्टूबर, 2023 को किया जा रहा है, जो कि एक सराहनीय प्रयास है।

आधुनिक ग्रंथालयों को सेवा संस्थाओं के रूप में जाना जाता है। ये संस्थाएँ न केवल ग्रंथालय सामग्री का अधिग्रहण, व्यवस्थापन और उसका प्रसार करती हैं बल्कि सक्रिय होकर पाठकों द्वारा इसके प्रयोग को भी प्रोत्साहित करती हैं। विश्वविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियों के साथ–साथ शिक्षकों, छात्र–छात्राओं में सृजनात्मकता के विकास में सेमिनार, कार्यशाला की अहम भूमिका होती है। इससे विद्यार्थियों, शिक्षकों में अध्ययन–अध्यापन के साथ–साथ विविध कार्यक्रमों में भाग लेकर अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त होता है।

मैं सेमिनार के सफल आयोजन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ तथा विश्वविद्यालय को इस कार्य के लिए साधुवाद देता हूँ। मुझे आशा है कि इसके माध्यम से विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को उपयोगी जानकारी मिलेगी। आपका विश्वविद्यालय निरन्तर प्रगतिपथ पर अग्रसर रहे।

(प्रो.आलोक कुमार चक्रवाल)

सिद्धिमूलं प्रबन्धनम्
भा. प्र. सं. इन्दौर
IIM INDORE

भारतीय प्रबंध संस्थान इन्दौर

प्रबंध शिखर, राऊ-पीथमपुर रोड़, इन्दौर - 453 556 (म.प्र.), भारत

INDIAN INSTITUTE OF MANAGEMENT INDORE

Prabandh Shikhar, Rau-Pithampur Road, Indore - 453 556 (M.P.), India

Phone: +91 731 2439501, E-mail: director@iimidr.ac.in, Website: www.iimidr.ac.in

प्रो. हिमाँशु राय
निदेशक
Prof. Himanshu Rai
Director

October 25, 2023

It's such a delight to know that the Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University, in collaboration with the Central Sanskrit University, is organizing a two-day International Seminar on "Innovative Approach in Knowledge Creation, Communication, and Conservation: Perspectives from Sanskrit Universities and Libraries." As someone who appreciates the depth of wisdom present in Sanskrit Literature, I firmly believe that this topic holds great relevance and significance, and I feel a strong connection to the seminar's theme.

The changing dynamics of global education demand innovative approaches, and this event promises to shed light on how Sanskrit universities and libraries can adapt and thrive in this evolving landscape. The galaxy of speakers from the field of Sanskrit Education and Library and Information Science will undoubtedly inspire and enlighten the participants. The discussions around Indian Knowledge Systems, the conservation of Sanskrit Heritage, the New Education Policy's prospective impact on Sanskrit Education and Research, and other pertinent topics are not only timely but also essential for the growth of Sanskrit knowledge.

In today's ever-changing world, it is indeed the need of the hour to organize conferences and seminars that focus on preserving and advancing the rich heritage of Sanskrit knowledge.

I congratulate the organizers for taking the initiative to host this event. Events like these pave the way for the betterment of education, research, and knowledge management - and preserve the Indian culture and languages. I am sure that the insights and discussions that will emerge from this seminar will be immensely beneficial to all the participants.

I look forward to the success of this seminar and the positive impact it will have on the future of Sanskrit education and knowledge preservation. Congratulations once again.

Himanshu Rai

EQUIS ACCREDITED
AACSB ACCREDITED
ASSOCIATION OF MBAS ACCREDITED

प्रो. एस.के. सिंह
कुलपति
Prof. S.K. Singh
Vice Chancellor

राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय, कोटा
RAJASTHAN TECHNICAL UNIVERSITY, KOTA

क्रमांक:आरटीयू/पीसीएस/एफ(1)/26/2023/2964 दिनांक: 24.10.2023

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा दिनांक 30 एवं 31 अक्टूबर 2023 को "संस्कृत विश्वविद्यालय–पुस्तकालययोः परिप्रेक्ष्ये ज्ञान सर्जन–संचार–संरक्षणेषु नवोन्मेषी दृष्टिः" विषय पर दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है।

संस्कृत भाषा भारत की प्राचीनतम भाषाओं में एक है और भारतीय संस्कृति एवं धार्मिक ग्रंथों की मूल भाषा है इसलिए संस्कृत शिक्षा का महत्व राष्ट्रीय शिक्षा नीति में उच्च मानकों के साथ मान्य किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय संस्कृति के प्रति समर्पण हेतु संस्कृत भाषा को प्रारंभिक भाषा में समावेश करने हेतु बताया है। जिससे छात्रों को अपनी भाषा व संस्कृति का ज्ञान प्राप्त हो सके।

मुझे खुशी है कि श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों, विषय विशेषज्ञों के बीच नई शिक्षा नीति के परिप्रेक्ष में संस्कृत शिक्षा एवं ग्रंथों में तकनीक के समावेशन एवं नवीन दृष्टिकोणों के विभिन्न आयामों पर गहन चर्चा होगी जो सार्थक सिध्द होगी।

मैं श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के संकाय सदस्यों, छात्र-छात्राओं तथा प्रतिभागियों को अपनी शुभकामनाऐं देता हूं और संगोष्ठी के सफल आयोजन की कामना करता हूं।

24.10.2023

(प्रो. एस.के. सिंह)
कुलपति

NETAJI SUBHAS UNIVERSITY
JAMSHEDPUR
(A Unit of Sitwanto Devi Mahila Kalyan Sansthan)
Estd. Under Jharkhand State Private University Act, 2018
Approved by AICTE, PCI, BCI, NCTE, INC & JNRC

Ref. No. : VC/NSU/23-24 Date : 21.10.2023

Prof. Gangadhar Panda
Vice Chancellor, NSU
Former Vice Chancellor,
Shri Jagannath Sanskrit University, Puri
and
Kolhan University, Chaibasa, Jharkhand

SHIVA SAMKALPA

"Mind is never a problem but mind-set is. Education must focus on how to think rather what to think." This aphorism told by our Hon'ble Prime Minister, Shri Narendra Modi, is relevant to Education in its present context. That is why he advocates in NEP-2020 for the all-round development of and drawing out the best in the child.

After independence, the first Education Commission was established in 1948 under the chairmanship of Dr. S. Radhakrishnan, on the basis of its recommendation, the University Grants Commission came into force. NAAC is its later development. Thereafter, Mudaliar Commission (1952-53) and Sanskrit Commission (1956-57) recommended development on Secondary Education and Sanskrit Education respectively. These were followed by Kothari Commission (1964-66), National Policy on Education (1986) and Programme of Action (1992). The Nation has not noticed any remarkable change as Landmark in the path of Education: However, as per the recommendations of Sanskrit Commission, Rashtriya Sanskrit Sansthan, now elevated to a Central University, was established besides other promotional work for Sanskrit Education. Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University, erstwhile Lal Bahadur Shastri Rashtriya Sanskrit Vidyapeeth was a college, which latter got the status of Deemed to be University.

NETAJI SUBHAS UNIVERSITY

JAMSHEDPUR

(A Unit of Sitwanto Devi Mahila Kalyan Sansthan)

Estd. Under Jharkhand State Private University Act, 2018

Approved by AICTE, PCI, BCI, NCTE, INC & JNRC

Ref. No. : VC/NSU/23-24 Date : 21.10.2023

It is a matter of pride and fillip that this has got the status of a prestigious Central University catering to the needs of Sanskrit Education in the capital of the Country. I have a nostalgic attraction to this institution as I had served it as Registrar.

NEP-2020 has been trying to reform at all levels of Education from pre-school to Universities giving importance to Research. It also tells about Indian Knowledge System, Conservation and Preservation of heritage. Digitization of Libraries, Net-working and Resource sharing etc.

I am enlightened to learn that Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University, New Delhi has designed an International Seminar on 'Innovative Approach in Knowledge Creation, Communication and Conservation Perspectives from Sanskrit Universities and Libraries.' I trust that the brain storming sessions and Research Papers outcomes shall invigorate the expectations to reach the goals dreamt by the Nation through NEP-2020.

Gangadhar Panda

NSU (CAMPUS): Pokhari, Bhilai Pahari, PS: MGM, Dist: East Singhbhum, Jamshedpur - 831012 Toll Free No: 1800 8899 022

NSU (CITY OFFICE): 4th Floor, Shatabdi Tower, Sakchi, Jamashedpur - 831001 Landline No: 0657 2233 022

Visit: www.nsuniv.ac.in | Mail us on: info@nsuniv.ac.in

राष्ट्रहिताय संस्कृतम्

प्रो. हरेराम त्रिपाठी
कुलगुरू
Prof. Hareram Tripathi
Vice-Chancellor

कविकुलगुरु-कालिदास-संस्कृत-विश्वविद्यालयः
रामटेकनगरम् (महाराष्ट्रराज्यम्)

Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University
Ramtek (Maharashtra)

Established by Government of Maharashtra; Accredited by NAAC with 'A+' Grade

Letter No. KKSU/VCO/2023/258
Date :- 23.10.2023

MESSAGE

I am very happy to note that, Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University, New Delhi is going to organize two days International Seminar on **"Innovative approach in knowledge creation, communication and conservation : Perspectives from Sanskrit Universities and Libraries"** on 30 & 31 October, 2023.

I am confident that, there will be a fruitful discussion about techniques to be used in the Libraries of Sanskrit Universities in view of National Education Policy, which will give a boost and new direction to the use of modern techniques to the Libraries of Sanskrit Universities.

I congratulate the organizers for organizing International Seminar on this useful subject. I convey my best wishes for success of Seminar.

हरेराम त्रिपाठी

Prof. Hareram Tripathi
Vice-Chancellor

Ramtek Office : Administrative Building, Mouda Road, Ramtek - 441106. Dist. Nagpur (M.S.)
Ph. No. (07114) 255549 Email : vc@kksu.org
Website - www.kksu.org www.kksanskrituni.digitaluniversity.ac

BABA GHULAM SHAH BADSHAH UNIVERSITY, RAJOURI-(J&K)

Established by Government of Jammu & Kashmir
Recognized by UGC under section 2 (f) and 12 (B)

Prof Akbar Masood
Vice Chancellor

BGSB University, Dhanore,
Rajouri, Jammu & Kashmir

BGSBU/VC/PS/44
Date: 21/10/2023

MESSAGE

I am pleased to know that Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University New Delhi and Central Sanskrit University New Delhi are jointly organizing a two-day International Seminar on "Innovative Approach in Knowledge Creation, Communication, and Conservation: Perspectives from Sanskrit Universities and Libraries" on October 30-31, 2023 at SLBSNS University campus.

I am sure that the International Seminar will bring forth innovative ideas and the far-reaching deliberations shall add new dimensions to Sanskrit Universities regarding promoting quality education and research as per the emerging dynamics of global education.

I congratulate the organizers for coming up with such an innovative two-day International Seminar and I wish the best to the delegates, participants, speakers and all those who are associated with this path-breaking International Seminar.

I have visited the Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University New Delhi and am impressed and fascinated by the extra-ordinary work-culture, world-class infrastructure and the in-depth focus and emphasis on academics and research.

I wish the best for success.

Prof Akbar Masood
(Vice Chancellor)

Prof. (Dr.) Tapan Kumar Shandilya
Vice-Chancellor

Dr. Shyama Prasad Mukherjee University
Ranchi (Jharkhand)
Email : vcdspmu@gmail.com
vc@dspmuranchi.ac.in
Website : www.dspmuranchi.ac.in
☎ : 0651-2911573

Ref. **DSPMU/VC/129/23** Date **23/10/2023**

Greeting Message

It is a matter of immense pleasure and great delight to know that ***Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University***, ***New Delhi*** in collaboration with ***Central Sanskrit University***, ***New Delhi*** is jointly organizing a Two-Day International Seminar on ***"Innovative Approach in Knowledge Creation, Communication and Conservation: Perspective from Sanskrit Universities and Libraries"*** on 30th and 31st October, 2023.

The main focus of this International Seminar will be to present new ideas and dimensions to Sanskrit Universities on how to promote quality education and research as per the changing dynamics of the global education scenario. It will be opening new panoramas for the Sanskrit Libraries towards better and more effective knowledge management through best technology involvement.

The publication of a proceeding on the occasion of this International Seminar will result in an auspicious resolution. I believe that in this seminar, there will be a worth and meaningful discussion on the present issues and viable solutions will be presented by the scholars and researchers which will bring a new beginning towards the way the knowledge is created, communicated and conserved.

I wish for the efficacious organization of this International Seminar and quality publication of the seminar proceeding.

T. K. Shandilya

Prof. (Dr.) Tapan Kumar Shandilya
Vice-Chancellor
DSPMU, Ranchi.

प्रो0 आनन्द कुमार त्यागी
कुलपति
Prof. Anand K. Tyagi
Vice Chancellor

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ
वाराणसी- 221002
Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith
Varanasi - 221002

दिनांक–22 अक्टूबर, 2023

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि श्री लाल बहादुर शास्त्री नेशनल संस्कृत यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली द्वारा दिनांक 30-31 अक्टूबर, 2023 को **'संस्कृत विश्वविद्यालय एवं पुस्तकालयों के परिप्रेक्ष्य में ज्ञान सर्जन, संचार एवं संरक्षण में नवोन्मेष'** विषयक दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है।

आशा है संगोष्ठी में देश–विदेश के प्रतिष्ठित विद्वान प्रतिभाग करेंगे, जिनके विचारों से जनसामान्य के साथ–साथ शिक्षक एवं शोधार्थी भी लाभान्वित होंगे।

मैं संगोष्ठी के सफल आयोजन की कामना करता हूँ तथा समस्त विश्वविद्यालय परिवार एवं आयोजन कार्य में लगे सभी सदस्यों को साधुवाद देता हूँ।

(प्रो0 ए0 के0 त्यागी) 24/10/23
कुलपति

Tel : +91-542-2225472 (O), 2221268 (R), 2223160(Camp Off.), Fax : 2225472(O), 2221268 (R), e-mail: vcmgkvp@gmail.com

प्रो० बिहारी लाल शर्मा
कुलपतिः
सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालयः
वाराणसी-221002
दूरभाषः- 9911117489

Prof. Bihari Lal Sharma
Vice-Chancellor
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi-221002
Mb. No:- 9911117489

नैक द्वारा 'ए' ग्रेड प्राप्त

पत्रांक / Ref .... दिनांक / Date ....

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष व प्रसन्नता है कि श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली एवं केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में **"संस्कृतविश्वविद्यालय-पुस्तकालययोः परिप्रेक्ष्ये ज्ञानसर्जन-संचारसंरक्षणेषु नवोन्मेषः"**(Innovative approach in knowledge creation, communication and conservation: Perspectives from Sanskrit Universities and Libraries.) विषय पर दिनांक 30 एवं 31 अक्टूबर 2023 को द्वि-दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन तथा स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। इस महत्वपूर्ण विषय पर संगोष्ठी के आयोजन का संकल्प निश्चय ही सराहनीय है। जिसके लिए संगोष्ठी के आयोजक और स्मारिका का सम्पादक मण्डल विशेष रूप से बधाई का पात्र है। मैं आशा करता हूँ कि संगोष्ठी में उपस्थित विद्वज्जनों द्वारा इस विषय पर व्यक्त किये गये महत्वपूर्ण विचारों से जनसामान्य व शिक्षार्थी अवश्य ही लाभान्वित होंगे। प्रकाश्य स्मारिका में समाहित मूर्धन्य साहित्यकारों विद्वान व नवोदित रचनाकारों के सारगर्भित व शोधपूर्ण आलेख व रचनाएं पाठकों, शिक्षार्थियों व शोधार्थियों का ज्ञानवर्धन और मार्गदर्शन करने के साथ-साथ उनके बौद्धिक विकास में सहायक होंगी, ऐसा मेरा विश्वास है। मेरी शुभकामना है कि आपका यह सत्प्रयास पूर्ण रूप से सफल हो।

संगोष्ठी के सफलतापूर्वक आयोजन एवं स्मारिका के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

बिहारीलाल शर्मा

Web site : www.ssvv.ac.in ✲ E-mail : vc.ssvv@gmail.com, dblsharma@gmail.com
Telephone No. (Off) : 0542-2204089, (Resi): 0542-2206617

आचार्य (डॉ.) अनिल कुमार राय
कुलपति

Professor (Dr.) Anil Kumar Rai
Vice-Chancellor

पंडित दीनदयाल उपाध्याय
शेखावाटी विश्वविद्यालय, सीकर (राज.)

Pandit Deendayal Upadhyaya
Shekhawati University, Sikar (Raj.)

वेबसाईट : http://www.shekhauni.ac.in/
ई-मेल : vc.shekhauni@gmail.com
दूरभाष नं. : +91-92573-87478, 01572-232411

Dear Dr. Rajesh K Pandey ji
Organizing Secretary of the International Seminar
Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University, New Delhi

Heartiest Greetings from PDUSU, Sikar, Rajasthan ! Thanks a lot for your kind invitation. Due to participating in an important meeting during the same day, it may not be possible to participate in the said international seminar. Deeply regret the inconvenience caused.

It is a matter of immense pleasure and great delight to know that Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University, New Delhi in collaboration with Central Sanskrit University, New Delhi is jointly organizing a Two-Day International Seminar on "Innovative Approach in Knowledge Creation, Communication and Conservation: Perspective from Sanskrit Universities and Libraries" on 30th and 31st October, 2023. The main focus of this International Seminar will be to present new ideas and dimensions to Sanskrit Universities on how to promote quality education and research as per the changing dynamics of the global education scenario. It will be opening new dynamics for the Sanskrit Universities and its Libraries towards better and more effective knowledge management through new technologies. I believe that in this seminar, there will be a worth and meaningful discussion on the present issues and viable solutions will be presented by the scholars and researchers which will bring a new beginning towards the way of knowledge.

I hope meaningful participation in realizing the theme of the international seminar will definitely help towards the implementation of NEP- 2020 and making Bharat a global knowledge superpower – "The Vishwa Guru".

Best wishes to you and great success of the international seminar !

27/10/2023

Professor (Dr.) Anil Kumar Rai
Vice- Chancellor
Pandit Deendayal Upadhyaya Shekhawati University
Sikar, Rajasthan

Prof. (Dr.) Pawan Kumar Poddar
Pro-Vice Chancellor
प्रो०(डॉ०) पवन कुमार पोद्दार
प्रति कुलपति

Binod Bihari Mahto Koyalanchal University
Dhanbad, Jharkhand-826004
Email: provcbbmku@gmail.com
drpkpoddar@rediffmail.com
Mob: 9431214154, 7667254439

Ref. No. .....

Date 23/10/2023

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष व प्रसन्नता है कि श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली एवं केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में "संस्कृतविश्वविद्यालय-पुस्तकालययोः परिप्रेक्ष्ये ज्ञानसर्जन-संचारसंरक्षणेषु नवोन्मेषः" (Innovative approach in knowledge creation, communication and conservation: Perspectives from Sanskrit Universities and Libraries.) विषय पर दिनांक 30 एवं 31 अक्टूबर 2023 को द्वि-दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन तथा स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। आशा है कि स्मारिका में दी जाने वाली जानकारी समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए ज्ञानवर्धक तथा उपयोगी होगी।

मैं संगोष्ठी के सफलतापूर्वक आयोजन एवं स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

प्रो. पवन कुमार पोद्दार
प्रति कुलपति

विश्व हिन्दू परिषद ॐ VISHVA HINDU PARISHAD
टैलीफैक्स : 91-11 26178992, 26103495
तार : हिन्दूधर्म Gram : "HINDUDHARMA"
Telefax : 91-11-26178992, 26103495
Registered Under Societies Registration Act 1860 No. S 3106 of 1966-67 with Registrar of Societies, Delhi
संकट मोचन आश्रम, (हनुमान मंदिर) सेक्टर-६, रामकृष्ण पुरम्, नई दिल्ली - ११००२२ (भारत)
SANKAT MOCHAN ASHARAM (HANUMAN MANDIR), SECTOR-VI, RAMAKRISHNA PURAM, NEW DELHI-110 022 (BHARAT)

दिनांक-27.10.2023

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली और केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में **"संस्कृतविश्वविद्यालय-पुस्तकालययोः परिप्रेक्ष्ये ज्ञानसर्जन-संचार-संरक्षणेषु नवोन्मेषी दृष्टिः"** विषय पर द्वि-दिवसीय अन्ताराष्ट्रिय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस संगोष्ठी में हुए मंथन के माध्यम से नवोन्मेषी दृष्टिकोण के साथ ज्ञानसर्जन, प्रसार तथा संरक्षण के लिए नयी दिशा प्रस्तुत होगी। संस्कृत शिक्षा तथा वैश्विक समाज कल्याण हेतु यह मन्थन अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा।

सभी श्रेष्ठ विद्वानों की उपस्थिति में यह संगोष्ठी सफल हो, इसके लिए शुभकामना तथा आशीर्वाद प्रेषित करता हूँ।

मंगलकामनाओं के साथ।

दिनेश चन्द्र

(दिनेश चन्द्र)

Website : www.vhp.org, E-mail : hinduvishwa@gmail.com, vhpintlhqs@gmail.com

राजेश राय., I.T.S.,
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
RAJESH RAI., I.T.S.,
Chairman & Managing Director

आईटीआई लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
ITI LIMITED
(A Govt. of India Undertaking)
संदर्भ : सी.एम.डी/79
दिनांक : 25.10.2023

प्रिय श्री- पाण्डेय जी,

विषय : श्री ला.ब.शा.रा.संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में ओयोजित द्विदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के संबंध में।

उपर्युक्त विषय के संबंध में आपके द्वारा प्राप्त पत्र सं. 81-F.5(81XSeminar)/LBSNSU/Library/2023 दिनांक 18.10.2023 के संदर्भ में, हमें अपार प्रसन्नता हो रही है कि श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली एवं केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में **"संस्कृतविश्वविद्यालय-पुस्तकालययो: परिप्रेक्ष्ये ज्ञानसर्जन-संचार-संरक्षणेषु नवोन्मेषी दृष्टि: (Innovative approach in knowledge creation, communication and conservation: Perspectives from Sanskrit Universities and Libraries.)"** विषय पर दिनांक 30 एवं 31 अक्टूबर, 2023 को आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी में भाग लेने के लिए आपने मुझे आमंत्रित किया। इसके लिए मैं आपका हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

अपरिहार्य कारणों से मैं इस संगोष्ठी में भाग नहीं ले पा रहा हूँ। किंतु हृदय से मैं कार्यक्रम में उपस्थित रहूंगा। संस्कृत भारत की प्राचीन-वैज्ञानिक, आध्यात्मिक एवं साहित्यिक रूप से समृद्ध भाषा है। हमारे यहाँ संस्कृत को देववाणी के रूप में मान्यता प्राप्त है। संसार के विद्वानों द्वारा संस्कृत को कंप्यूटर के लिए अति उपयुक्त माना जाता है। इस उत्कृष्ट भाषा के उत्थान में लगे हुए विश्वविद्यालय एवं पुस्तकालय निश्चित रूप से अन्वेषी ज्ञान के सृजन, संचार एवं उसके संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। यदि इनका और अधिक प्रचार-प्रसार हो तो भारतीय जनमानस में संस्कृत ज्ञान एवं विज्ञान की संवाहिका का स्थान प्राप्त कर सकती है।

मैं इस में प्रतिभागी नहीं बन पा रहा हूँ इसका मुझे खेद रहेगा। फिर भी मैं इस कार्यक्रम के आयोजक मंडल को अपने और अपने संस्थान की ओर से हार्दिक बधाई देता हूँ एवं आशा करता हूँ कि यह कार्यक्रम सफल और सार्थक बने।

शुभ कामनाओं सहित,

भवदीय,

25/10/23

(राजेश राय)

सेवा में,
श्री राजेश कुमार पाण्डेय
संयोजक सचिव
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
बी-4, कुतब सांस्थानिक क्षेत्र
नई दिल्ली-110016

SOLOMON ISLANDS NATIONAL UNIVERSITY
Faculty of Agriculture, Forestry & Fisheries
Professor (Dr.) Paras Nath
B. Sc. (Ag.) Honours in Horticulture, M. Sc. (Ag.) Entomology & Agricultural Zoology,
Ph. D. in Entomology & Agricultural Zoology, P.D.F. in Entomology & Agricultural Zoology
Dean & Professor of Entomology & Agricultural Zoology

Date: 23rd October, 2023

Message from The Dean, FAFF, SINU, Solomon Islands

I am delighted that Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University, New Delhi in Collaboration with Central Sanskrit University, New Delhi, India is organizing an ***International Seminar on Innovative Approach in Knowledge Creation, Communication and Conversation with the Perspectives from Sanskrit Universities and Libraries*** from 30-31 October, 2023. We at the Solomon Islands National University aspire very strongly to expand our research and innovation horizon, especially in the niche areas of Organic Agriculture which knowledge is deep rooted in Vedic Literature.

The concept of Agriculture in the Vedas which is the oldest book in the library of mankind deal adequately with organic agriculture which is largely being practiced in Solomon Islands. Slowly and slowly modernization of agriculture is taking place which is creating environmental pollution and human health hazards.

Vedic agriculture (Organic Farming) may help the Solomon Islanders to feed healthy food to its inhabitants at the same time may prevent the health hazards and reduce the impact of environmental pollution and climate change. To create the confidence amongst the farmers to use the Vedic farming models Vedic agricultural knowledge need to be tested in the current scenario of modern agriculture that usage chemical fertilizers and pesticides which are creating environmental pollution, threatening human health and threatening the earth atmosphere and causing climate change. Validation of vedic agricultural knowledge in the current context need collaboration amongst scholars of Sanskrit universities and other academic institutions dealing with Vedic literature and agriculture and science-based universities whose academics are specialists of the modern agriculture science and other branches of applied science but not aware of the Vedic literature dealing with agriculture written in Sanskrit language. The collaboration amongst Sanskrit Scholars and agriculture scientist may pave the way forward to feed the vast growing population and save the mother earth and halt the impact of environmental pollution and climate change.

The positive outcome of the Vedic knowledge validation result may be the driving force behind the Organic Farming leading to better environment which may result the quality oflife of the mankind. I hope this seminar will provide the platform to the Sanskrit scholars

and agriculture scientists who may work together to address some of the challenges posed by modern farming system and also provide solutions in this vast field of Agriculture. I understand that the seminar is being attended with lots of expert key note speakers, researchers and future budding scholars and students who will be encouraged to select the information available in Vedic literature and validate them for its application in the field. This will definitely go a long way in enriching the knowledge of the participants in general and Sanskrit scholars and agriculture scientist to select the research topics for its validation and application in the field of agriculture. This will also create interest amongst the graduates, research scholars and the faculty members in particular, especially those who are interested in the field of healthy crop production.

I am extremely happy that many national and international experts and delegates are attending the seminar to present their papers and also deliver key notes and invited talks. Such a timely seminar cannot be organized without the whole-hearted commitment and involvement of many people, be it faculty or students or sponsors. I admire their commitment and congratulate them on the success of the seminar. I also profusely thank all the sponsors for their effort to encourage academic research by way of liberal sponsorships.

I am very much happy and indebted to the organizers who invited me to participate and deliver a lecture during the Seminar. I hope to further improve our research skills by organizing more of such international seminars and conferences in future. I sincerely hope that this seminar will facilitate the establishment of joint research groups and become a forum for the exchange of research ideas in the field of Vedic Agriculture.

I wish the International Seminar a grand success.

(Professor (Dr.) Paras Nath)
Dean, FAFF, SINU, Kukum Campus, Solomon Islands

Dr. Don Karunanayake
Associate Professor / University Librarian
Head of Department – Library & Information System
School of Humanities- Faculty of Education & Humanities
University Librarian,
Central Library
Solomon Islands National University

P.O Box R113 / Honiara / Solomon Islands
Email: Don.Karunanayake@sinu.edu.sb
Web: www.sinu.edu.sb

Date: 23rd October, 2023

Message from The Librarian, SINU, Solomon Islands

It is my pleasure to highlight that Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University, New Delhi in Collaboration with Central Sanskrit University, New Delhi, India is hosting an ***International Seminar on Innovative Approaches in Knowledge Creation, Communication and Conversation with the Perspectives from Sanskrit Universities and Libraries*** from 30-31 October 2023. the Solomon Islands National University Library convey the heartiest congratulation towards the success of the seminar series. The library will elaborate its research and innovation ideas in the **"Impact of Libraries on Oriental Studies (Sanskrit) in the Digital Sphere:**
a step toward the innovative approach in knowledge creation, communication and conservation in the digital library context".

This presentation gives an overview of determining criteria for the effective use of digital content among digital scholars focusing on their behavior of information. The Idea of (विद्वान् आदिम) or "scholarly primitives" are central to this presentation. The "primitives" are considered as the "finite list of self-understood terms" (स्वतः अवगतपदानां परिमितसूची). The "primitives" refer to some basic functions common to scholarly activity across disciplines (Unsworth 2000). Hence, this presentation considers the proposal of Unsworth as a significant milestone in the information behavioural studies on digital space.

The idea of seven primitives such as
1. Discovering (आविष्कारं कुर्वन्), 2. Annotating (टिप्पणीकरणम्) 3. Comparing (तुलनां कुर्वन्) 4. Referring (सन्दर्भयन्), 5. Sampling (नमूनाकरणम्), 6. Illustrating (दृष्टान्तरूपेण), 7. Representing

(प्रतिनिधित्वं कुर्वन्) are focused.

The imputes for supporting scholars according to the information behaviors come to light from day-to-day practical observation as a librarian, a teacher, course designer and researcher.

The discussion contrasts the diverse range of available software applications in libraries in a nutshell and evaluates the alignment of those with such primitives.

The conclusion suggests that the development of Sanskrit libraries needs to be geared toward such scholarly primitives. Such an angle may lead to achieving the three keystones "knowledge creation, communication and conservation" by filling the void areas between scholars and libraries through innovative digital tools to a certain extent.

"My best wishes for the success of the international seminar at your university"

Don Karunanayake
30|10|2023

Dr. Don Karunanayake
Associate Professor/ University Librarian
Dip, (Russia), BA, (Sri Lanka) MA, (Sri Lanka) MLS, (Sri Lanka) PhD, (Japan)

BUILDING AND ARCHITECTURALENGINERNG
POLITECNICO, MILANO 1863, MILANO, ITALY

Messages

It is my immense pleasure to know that Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University, New Delhi, is organizing an international seminar "On Innovative Approach in Knowledge Creation, Communication, and Conservation: Perspectives from Sanskrit Universities and Libraries" in Collaboration with Central Sanskrit University, New Delhi from October 30th–31st, 2023.

I convey my heartfelt and warmest congratulations to the organizer and the university fraternity as a whole for selecting the prospective topic of the seminar, I am sure that two days of deliberation and discussion will be fruitful for the participant and will result in a memorable stay in New Delhi during the seminar. My best wishes to the team of .organizer for the grand success of the seminar The articles published in the souvenir of the seminar will be beneficial for end users. No doubt, the hard work of the organising committee and their perseverance have paid off. Congratulations.

Prof. Vijay Kumar Srivastava **Dated; 23/10/2023**

VISITING PROFESSOR, ABB, POLITECNICO, MINANO. ITALY
Post Doctoral Fellows (Uni. of Bath, UK ; QMW, London & MPA, Stuttgart, Germany)
Ph.D.(Mech. Engg.); FIE (India); MASC (USA), MCW (UK), MDFG (Germany),
MJSPS (Japan), DFREng (UK).
***Ex-Professor (HAG Scale), Department of Mech. Engg., IIT(BHU), Varanasi.**
Ex-Visiting Professor, ITA, RWTH Aachen University, Aachen, Germany.
***EX-ADJUNCT VISITING PROFESSOR. FACULTY OF ENGG. & INDS SCIENCES**
SWINBURNE UNIVERSITY OF TECHNOLOGY, VICTORIA 3122, AUSTRALIA

भारत EXPRESS
सत्य•साहस•समर्पण

उपेन्द्र राय
चेयरमैन एंड मैनेजिंग डायरेक्टर
एडिटर-इन-चीफ
भारत एक्सप्रेस न्यूज़ नेटवर्क
टीममेट फाउंडेशन
द प्रिंटलाइंस मीडिया

दिनांक : 21st October 2023

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय एवं केंद्रीय संस्कृति विश्वविद्यालय नई दिल्ली के संयुक्त तत्वधाम में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है ।

संस्कृत शिक्षा और शोध को लेकर व्यापक दृष्टिकोण विकसित हो इसके लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किए जा रहे प्रयासों की मैं सराहना करता हूं। संस्कृत शिक्षा भाषा और संस्कृति की जननी है । बदलते वक्त के साथ संस्कृत की अपनी गरिमामय उपस्थिति देश की भाषा और संस्कृति को आक्षुण्ण बनाए रखे इसकी जरूरत है। संस्कृत शिक्षा और ग्रंथालय को तकनीक से जोड़ कर नया आयाम देकर उसे समृद्ध करने की कोशिश प्रशंसनीय है।

इस विशेष अवसर पर मेरी ओर से श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के समस्त अध्यापकों और विद्यार्थियों को ढेर सारी शुभकामनाएं

उपेन्द्र राय

उपेन्द्र राय
अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक,
प्रमुख संपादक

भारत एक्सप्रेस न्यूज़ नेटवर्क
TEAMMATE The Printlines NBSB
कॉरपोरेट ऑफिस :- H -67, सेक्टर - 63, नोएडा, उत्तर प्रदेश - 201301, फ़ोन न. , + 91 120 6979110, ई-मेल:- upendrrarai@bharatexpress.com
आवासीय पता:- C -24, ग्रेटर कैलाश - 1, नई दिल्ली, मो. 9599266666, 7838266666, ई-मेल:- upendrrarai@gmail.com

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University

(Central University)

बी–4, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली–110 016 (भारत)

B-4, Qutub Institutional Area, New Delhi-110 016 (INDIA)

पत्र संख्या SLBSNSU/Reg./2023-24/900 दिनाँक 27.10.2023(ई.)

Ref. No. Date

संदेश

यह अत्यन्त प्रसन्नता एवं गर्व का विषय है कि श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली एवं केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 30 व 31.10.2023 को "**संस्कृतविश्वविद्यालय-पुस्तकालययोः परिप्रेक्ष्ये ज्ञानसर्जन-संचार-संरक्षणेषु नवोन्मेषः** (Innovative approach in knowledge creation Communication and Conservation: Perspectives from Sanskrit Universities and Libraries)" विषयक दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रिय संगोष्ठी का आयोजन हमारे विश्वविद्यालय परिसर में किया जा रहा है।

इस अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सन्दर्भ में संस्कृत शिक्षा एवं ग्रन्थालय में तकनीक समावेशन एवं नवोन्मेषी दृष्टिकोण सम्बन्धित विभिन्न आयामों पर परिचर्चा के अन्तर्गत संस्कृत शिक्षा एवं शोध को एक नई दृष्टि प्राप्त होगी, साथ ही साथ संस्कृत एवं अन्य भाषा के ग्रन्थालयों में आधुनिक तकनीकी के समावेश को गति मिलेगी। इस संगोष्ठी में भारतीय ज्ञान परम्परा, संस्कृत धरोहर का संरक्षण-रखरखाव, राष्ट्रीय शिक्षा नीति के परिप्रेक्ष्य में संस्कृत शिक्षा, शोध एवं पुस्तकालय, संस्कृत पुस्तकालयों में तकनीकी अन्तर्वेशन, संस्कृत विश्वविद्यालय में शोध-प्रकाशन के परिप्रेक्ष्य में नैतिकता, संस्कृत पुस्तकालयों के नेटवर्किंग, संसाधन साझेदारी एवं भविष्यगत रूपरेखा इत्यादि विषयों पर देश-विदेश के अनेक मर्मज्ञ विद्वानों द्वारा व्याख्यान होगा।

मैं अन्तर्मन से इस विशिष्ट अन्तर्राष्ट्रिय संगोष्ठी के सफलता की कामना करता हूँ।

(सन्तोष कुमार श्रीवास्तव)
कुलसचिव(प्र.)

दूरभाष/Tel : 011-46060606 (30 Lines), 46060505, 46060506, फैक्स/ Fax : 01146060633, 26533512, 26520255
ई-मेल/E-mail : info@slbsrsv.ac.in, वेबसाइट/Website : www.slbsrsv.ac.in

Indian Knowledge Systems and NEP

Dr. D. K. Singh
Assistant Professor
Dept. of Political Science
B. S. City College Bokaro, BBMKU Dhanbad, Jharkhand
Email- dksingsnd@gmail.com

The Bhartiya was sustainable and strives for the welfare of all. It is important that we regain the comprehensive knowledge systems of our heritage and demonstrate the Indian way of doing things to the world. This requires training a generation of scholars who will demonstrate and exemplify to the world a way of life so unique and peculiar to our great civilization. The NEP 2020 recognise this rich heritage of ancient and eternal Indian knowledge and thought as a guiding principle. The Indian knowledge systems comprise Jnan Vigyan and Jeevan Darshan, which have been evaluated out of experience, observation, experimentation and rigorous analysis. This tradition of validating and putting into practice has impacted our education, arts, administration law, justice, health, manufacturing and commerce. This has influenced the classical and other languages of Bharat. That was transmitted through textual, oral and artistic tradition. " Knowledge of India", in a sense, includes knowledge from ancient India and its success and challenges and a sense of Indian future aspirations specific to education, health, environment and indeed all aspects of life.

The new education policy has raised hopes for the recovery of the Sanskrit language. This attempt kept grinding in the vicious cycle of devious and sickening policies. Sanskrit has sufficient availability of knowledge. There is a feeling that in the dazzle of modern materialistic luxury, we are distancing ourselves from our actual capital, i.e., good conduct, morals, goodness and spiritual knowledge. It is the need of the hour that a language prosperous and helpful in an all-round development of character is studied.

भारतीयज्ञानपरम्परायां न्यायवैशेषिकशास्त्रम्

प्रो. बिष्णुपदमहापात्रः
आचार्यः, न्यायविभागः
श्री ला.ब.शा.रा.सं. विश्वविद्यालयः
नवदेहली-16

भारतीयज्ञानपरम्परा एका अविच्छिन्ना परम्परा । यस्याः परम्परायाः मूलं श्रुतिरेव । श्रुतिमाश्रित्य एव भारतीयज्ञानविज्ञानपरम्परा सततं प्रचलति । अस्यां परम्परायां चतुर्दशविद्यास्थानानि विराजते । तथाहि –

अङ्गानि वेदाश्चत्वारो मीमांसा न्यायविस्तरः ।

पुराणं धर्मशास्त्रञ्च विद्या ह्येताश्चतुर्दशः ॥

आयुर्वेदो धनुर्वेदो गान्धर्वश्चेति त्रयः ।

अर्थशास्त्रं तु विज्ञेयं विद्याऽष्टादशैव तु ।।

इमानि विद्यास्थानानि सततं परमपुरुषार्थस्य मोक्षस्य प्राप्त्यर्थं प्रवर्तयन्ति । विशेषतः सामाजिकव्यवस्थासंरक्षणाय धर्मस्य प्राधान्यमाश्रित्य सर्वाणि शास्त्राणि प्रवृत्तानि सन्ति । स च धर्मो भवति-

श्रुतिः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः ।

एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम् ॥

अर्थात् यद्यपि श्रुतेः सर्वथा प्राधान्यं विद्यते तथापि श्रुति-स्मृत्यनुसारं यदि प्रवर्तमानाः भवेमश्चेत् तर्हि समाजस्य सर्वविधं समुन्नयनं भविष्यत्येव तत्र नास्ति कश्चिद् विशयलेशः । दर्शनक्षेत्रे भारतीयदर्शनं वैदिकावैदिकरूपेण प्रतिष्ठितमस्ति । अवैदिकदर्शनेषु चार्वक-बौद्ध-जैनदर्शनानां ग्रहणं भवति । वैदिकदर्शनेषु सांख्य-योग-न्याय-वैशेषिक-पूर्वोत्तरमीमांसादर्शनानां ग्रहणं भवति । एतेषां समेषां दर्शनानां परमं लक्ष्यं ज्ञानविज्ञानमाध्यमेन समाजकल्याणमेव । मार्गाणां वैचित्र्येऽपि लक्ष्ये नास्ति किञ्चित् वैचित्र्यं । वेदाङ्गान्यपि समाजोन्नयने स्वीयदायित्वं निर्वहन्ति । यद्यपि एतानि विद्यास्थानानि राराजन्ते इह जगति, तथापि न्यायशास्त्रस्य वैशेषिकशास्त्रस्य शब्दशास्त्रस्य च प्राधान्यं विद्यते । तथाहि- "काणादं पाणिनीयञ्च सर्वशास्त्रोपकारकम्"। ज्ञानविज्ञानक्षेत्रे न्याय-वैशेषिकयोः प्राथम्यं स्त्रीक्रियते । यतः वैज्ञानिकयुगे यानि यानि तत्त्वानि अन्विष्यन्ते तानि तत्त्वानि श्रुत्याधारितं विवेचितानि सन्ति अस्माकं न्यायवैशेषिकदर्शने । जगदुत्पत्तिविषये वैशेषिकैः परमाणुवादस्य माध्याकर्षणशक्तिविषये गुरुत्वस्य पाकजप्रक्रियायां क्षणप्रक्रियायाश्च एवञ्च जीवनसञ्चालनाय ये ये नियमाः अपेक्ष्यन्ते तान् नियमान् आधारीकृत्य न्यायज्ञैः प्रमाणस्य हेत्वाभासस्य कथा-छलादेश्च तत्त्वानां विवेचनं कृतमिति । तथा च न्यायस्य श्रेष्ठत्वमाकलय्य कौटिल्येनापि भाषितं यत् -

प्रदीपः सर्वविद्यानाम् उपायः सर्वकर्मणां ।

आश्रयः सर्वधर्माणां शश्वदान्वीक्षिकी मता ॥

अर्थात् सर्वस्याः विद्यायाः श्रेष्ठतमेयमान्वीक्षिकी । यद्यपि कर्तव्याकर्तव्यनिर्धारणे मीमांसाशास्त्रम् अस्मान् प्रवर्तयति । तथापि वेदप्रामाण्यसंरक्षणार्थं न्यायशास्त्रस्य सदा प्रवृत्तिर्भवतीति मनसि निधाय निश्चप्रचं वक्तुं शक्यते यद् अस्ति भारतीयज्ञानपरम्परा एका अक्षुण्णापरम्परा । यतः इत्थमेव श्रूयते-

मोहं रुणद्धि विमलीकुरुते च बुद्धिं

सूते च संस्कृतपदव्यवहारशक्तिम् ।

शास्त्रान्तराभ्यसनयोग्यतया युनक्ति

तर्कश्रमो न कुरुते कमिहोपकारम् ॥

भारतीयज्ञानपरम्परायां न्यायवैशेषिकशास्त्रस्य या ज्ञान-विज्ञानपरम्परा विद्यते तस्याः रहस्यं शोधप्रबन्धे प्रकाशयिस्यते ।

Transforming the Future: An Overview of India's New Education Policy

Shashikant Ray [1'2]
[1] Department of Pharmaceutical Sciences,
University of Colorado Anschutz Medical Campus,
Aurora, CO 80045
[2] Department of Biotechnology,
Mahatma Gandhi Central University,
Motihari, Bihar, India-845401
Email:shashikant.ray@cuanschutz.edu,shashikantray@mgcub.ac.in

Abstract:

The "New Education Policy of India" represents a visionary blueprint for the transformation of the nation's education system. This policy, launched in 2020, seeks to address longstanding challenges and usher in a new era of educational excellence. This abstract provides a comprehensive overview of the key elements and objectives of the policy. The primary goal of the policy is to promote a holistic and multidisciplinary approach to education. It emphasizes the importance of early childhood care and education, paving the way for a strong foundation for children. In addition, the policy introduces sweeping reforms at various levels of education, including school, higher education, and vocational training. This abstract discusses the policy's emphasis on flexibility and choice in education, allowing students to tailor their learning experiences to their unique interests and talents. It introduces the concept of a 5+3+3+4 curricular structure, aiming to make education more engaging and relevant. Furthermore, the policy encourages a shift from rote learning to a more experiential and skill-oriented approach. The "New Education Policy" also envisions the establishment of a National Research Foundation to foster research and innovation, promoting India as a global hub for knowledge creation. It emphasizes the integration of technology and digital resources, making quality education accessible to all, even in remote areas. Inclusive and equitable access to education is a cornerstone of this policy, with special provisions for underprivileged and marginalized communities. The policy also aims to reinvigorate vocational education and skill development, aligning it with industry requirements, fostering employability and entrepreneurship. Overall, this abstract highlights that the "New Education Policy of India" seeks to empower learners, encourage critical thinking, and prepare students for the challenges of the 21st century. It represents a pivotal moment in India's educational history, with the potential to shape the future of the nation's workforce, research landscape, and societal development.

Beacon Technology: An IoT Based Smart Library Solution

Kumar Rohit[1] and Monika Verma[2]

[1] Assistant Librarian, Central Sanskrit University, Sri Ranbir Campus Jammu, Jammu & Kashmir-181122

[2] Assistant Librarian, Central Sanskrit University, Bhopal Campus, Sanskriti Marg, Bagh Sewaniya, Bhopal, Madhya Pradesh 462043

Abstract

The wireless Radio Frequency Identification (RFID) Technology is used successfully worldwide for different purposes and in various services of libraries like for automatic identification, tracking and authentication of library items. RFID Technology gained popularity later, with its growing features and functionalities. With advancement of technology this era is called as Internet of Things (IoT) era i.e. interconnection between various devices via the internet. Similarly, with IoT a new technology has been established known as Beacon Technology. The present study performed to get awareness about this latest emerging Beacon Technology trends, its working and applications in the library for creating a next generation smart library. We review various research papers, websites and other resources available on internet and find out that Beacon Technology uses wireless personal area network, in which a small Bluetooth broadcaster attach at any location or on object and broadcast tiny radio signals to the smart phone app, with the help of Bluetooth Low Energy (BLE) Technology, which used especially for transmitting data over a short distance. It is also observed that it is better alternative of RFID and easier to implement in the libraries services like to track the library items, vacant seats, books on shelves, to get notifications, self-check-in & check-out etc., because it give opportunity to navigate the patrons in library via Beacon enabled Mobile apps as well as provides few new facilities to the patrons and library administrators.

Keywords: Beacon, iBeacon, Bluetooth Low Energy, IoT, RFID;

Correspondence to author:

Mr. Kumar Rohit,
Assistant Librarian,
Central Sanskrit University, Sri Ranbir Campus Jammu, Jammu & Kashmir-181122
Email Id: *rohitgupta1991@gmail.com*
Contact No: 9541715721

Enhancing Access and Preservation of Sanskrit Heritage: A Networked Approach to Collaborative Resource Sharing in Digital Sanskrit Libraries

Dr. Jitender Kumar

Assistant Professor,

School of Education,

Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University,

New Delhi-110016

Abstract

==========

Digital technology and networking can be harnessed to promote the preservation and accessibility of Sanskrit manuscripts and resources in libraries. The challenges, opportunities, and future possibilities for creating a networked ecosystem that facilitates resource sharing and collaboration among Sanskrit libraries is the need of the hour, which is a potential impact of emerging technologies in the field.

This paper delves into the imperative task of safeguarding and disseminating the profound Sanskrit heritage through a networked approach to collaborative resource sharing in digital Sanskrit libraries. Sanskrit, a language of profound cultural, spiritual, and historical significance, is inextricably linked to India's cultural identity. However, the challenge lies in preserving an extensive and dispersed body of Sanskrit texts, manuscripts, and related resources scattered across libraries worldwide.

It explores the application of networked solutions to bridge these gaps, thereby enhancing the accessibility and preservation of Sanskrit heritage. It scrutinizes the benefits and challenges associated with digital networking, both in terms of cultural heritage preservation and ensuring wider public access. By examining current collaborative efforts among Sanskrit libraries, the paper delineates a roadmap for creating a networked ecosystem that fosters efficient resource sharing and knowledge exchange.

Furthermore, this also make inquires into emerging technologies such as machine learning, artificial intelligence, and semantic web applications that could revolutionize the digitization and cataloguing of Sanskrit texts. The prospects for the future are illuminated, suggesting that a networked approach can not only protect the integrity of Sanskrit heritage but also facilitate its broader dissemination to scholars and enthusiasts worldwide.

In conclusion, this article underscores the importance of harnessing networking and digital technologies in the preservation and dissemination of Sanskrit heritage. It offers a vision for a collaborative, interconnected Sanskrit library network that can serve as a model for preserving and promoting other endangered cultural heritages globally.

==========

Key Words:

Digital Technology, Networking, Sanskrit Heritage, Digital Libraries, Resource Sharing, Heritage Conservation, Cultural Preservation, Digitization, Open Access, Manuscript Preservation, Knowledge Exchange, Interdisciplinary Research etc.

NEW EDUCATION POLICY AND SANSKRIT LANGUAGE

Baikunth Kumar Vishwakarma
Ph.D. scholar
University Department of Political Science
B.B.M.K. University Dhanbad, Jharkhand
Email- baikunthkumar07@gmail.com
Mobile – 9534168678

Keywords: - NEP, Sanskrit, Innovation, Multidisciplinary, and Cultural Heritage.

Education is fundamental for achieving full human potential, developing an equitable and just society, and promoting national development. Providing universal access to quality education is the key to India's continued ascent and leadership on the global stage in terms of economic growth, social justice and equality, scientific advancement, national integration, and cultural preservation. The National Education Policy (NEP) 2020 was approved by the Union Cabinet, emphasizing the need to create an Indian Institute of Translation and Interpretation and mandate the mandatory teaching of Sanskrit and other Indian languages. In line with NPE 2020, Sanskrit will be taught in schools, and sufficient emphasis will be given to Indian and regional languages. Language serves as a conduit for pride in any nation and its rich cultural heritage, in addition to serving as a means of expression. It is a way to communicate human sentiments, cultural values, ethos, and emotions to others. Without language, two people cannot communicate academically with one another. Through this communication channel, knowledge can also be acquired and shared. According to Indian traditions, the world would have been dull, dark, and purposeless if there had been no language. Any nation can become paralyzed and eventually come to an end if language advancement and progress are neglected. This is the reason that every country has always included language development, innovation, evolution, and expansion in its educational policies. Further, Sanskrit grammar is vast and challenging, but its rules are well-established and based on a logical framework. They have been meticulously taught since antiquity. As we can see now, Sanskrit is a good medium of communication for scholars under these circumstances. Nonetheless, we can even attempt to demonstrate that at one point in its history, it served as a medium of communication for half-educated men or among a wider and more diverse public, including for international interactions. Finally, we can state that the Sanskrit language has been mainstreamed in the educational system in accordance with the New Policy following the implementation of the NEP 2020 and that a sufficient focus must be shifted towards Indian and regional languages. Like other major subjects in our education system, Sanskrit universities will grow into expansive, multidisciplinary institutions of higher learning, as will other universities that offer Sanskrit instruction. Therefore, it is now appropriate to concentrate on how the Sanskrit language can contribute to human development in an effective manner.

भारतीयज्ञानवाहिन्याः प्रचारप्रसारणे संस्कृतविश्वविद्यालयस्थानां ग्रन्थालयानां योगदानम्

Dr.Ekkurti Venkateswarlu
Assistant Professor,
School of Education,
S.L.B.S.N.S. University
New Delhi-110016

स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम् इति श्रुतिवाक्यम् अनुसृत्य निरन्तरं मनुष्येण सदा स्वाध्यायं कुर्तव्यं भवति| अर्थात् भारतीयज्ञानवाहिन्याः संरक्षणं,प्रसारः च स्वाध्यायेन भवतीति ज्ञाते। तदर्थं प्राचीनकाले आधुनिके काले अपि गुरुकुलेषु नित्यं स्वाध्यायः प्रचलति स्म, प्रचलन् अपि वर्तते। अस्य तु स्रोतांसि ग्रन्थालयस्थाः ग्रन्थाः, मातृकाः, तालभूर्जपत्राणि आसन् वर्तन्ते च।

आधुनिकधारायाः विश्वविद्यालयस्थ-ग्रन्थालयेषु अनेकेभ्यः ग्रन्थेभ्यः ज्ञानस्य प्रचारप्रसारः जायमानः वर्तते। साम्प्रतं प्रविधेः कालः वर्तते। अलपे काले महान्तमपि विषयं प्रचारप्रसारञ्च कर्तुं शक्यते। तादृशाः यन्त्रांशाः यन्त्रांशाः च समागताः वर्तन्ते।

भारतीयज्ञानवाहिन्याः प्रचारप्रसारणे संस्कृतविश्वविद्यालयस्थानां ग्रन्थालयानां महद्योगदानं वर्तते। तद्यथा

1. विभिनासु भाषासु ग्रन्थानाम् उपलब्धिः।
2. लौकिकविषयाणां संस्कृभाषायाम् उपलब्धिः।
3. ग्रन्थानाम् आभासीकरणम्।
4. दिव्याङ्गेभ्यः यन्त्रांश-तन्त्रांशानाम् उपलब्धिकरणम्।

इत्यादिभ्यः अकेभ्यः योगदानेभ्यः भारतीयज्ञानवाहिन्याः न केवलं संरक्षणम् अपि तु प्रचारप्रसारञ्च कर्तुं सक्षमाः भविष्यन्ति संस्कृत विश्वविद्यालयस्थाः ग्रन्थालया इति| स्पष्टम् अग्रे भविष्यति ।

भारतीय ज्ञान परम्परा एवं संस्कृत साहित्य

डा. प्रेम सिंह सिकरवार,
सहायक आचार्य, शिक्षापीठ,
श्री ला.ब.शा.रा.सं.
विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली-110016

शोधसार-

भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे, संस्कृतं संस्कृतिस्तथा।।"

प्राचीन भारतीय ज्ञान-विज्ञान की गौरवमयी परंपरा समस्त जगत् को आलोकित करती हुई देखी जा सकती है। संस्कृत भाषा में ज्ञान-विज्ञान की महती शृंखला है जो आज भी वैज्ञानिक जगत् के लिए कौतूहल का विषय बना हुआ है। आज जहाँ एक ओर आधुनिक विज्ञान समुन्नत स्थिति में दिखाई दे रहा है, वहीं दूसरी ओर इसके दोष तथा नकारात्मक प्रभाव देखे जा सकते हैं। परन्तु भारतीय ज्ञान का आज भी विश्व में कोई विकल्प नहीं है। जहाँ हितोपदेश और पंचतन्त्र जैसी कथाओं के माध्यम से भारतीय ज्ञान परम्परा को समृद्ध बनाने में संस्कृत साहित्य को अद्वितीय योगदान दिया हो। जहाँ प्रत्येक भारतीय को 64 कलाओं की जानकारी हो। यह संस्कृत भाषा के साहित्य के माध्यम से ही सम्भव हो पाया है, भारतीय संस्कृति में वसुधैव कुटुम्ब की भावना संस्कृत साहित्य की देन है।

अयं निज परोवेति गणना लघुचेतसाम्।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

हमारा भारतीय ज्ञान सभी देशों तक प्रचार-प्रसार होता रहा है। संस्कृत साहित्य का महत्व प्राचीनकाल से ही हमें प्रगति के मार्ग पर ले जाने में मदद करता हुआ, संस्कृति, आध्यात्मिकता, दर्शन, समाज, विज्ञान, कला, संगीत, प्रकृति, मनोरंजन, प्रेरणा, आदि के क्षेत्रों में हमें प्रेरित करता रहा है, जिसका अवदान आज भी भारतीय संस्कृत साहित्य में देखा जा सकता है। रामायण और महाभारत संस्कृत साहित्य के उपजीव्य महाकाव्य है, जो सभी में शिष्टाचार, स्नेह, मातृभक्ति, पितृभक्ति और राष्ट्रभक्ति की भावना जगाते है। इस पृथ्वी पर शायद ही कोई मनुष्य होगा जिसे अपने राष्ट्र, अपनी जन्मभूमि से प्रेम न हो। रामायण में भी श्रीराम ने कहा है-

अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।।

अन्य भाषा के रचनाकारों को भी संस्कृत के कवियों की लेखनी ने ही प्रेरित किया है, उन्होंने अपने राष्ट्र के नव जवानों को जागरुक करने का कार्य किया। इन्होंने अपने दृश्य-श्रव्य काव्य जैसे नाटकों, कथाओं, उपन्यासों के माध्यम से जनमानस के हृदय में राष्ट्रीय भावनाएँ उत्पन्न की। संस्कृत साहित्य आज भी अपनी समृद्ध भारतीय ज्ञान परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए प्रयासरत है। यथा-

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।

चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्।।

इस शोध पत्र में मेरे द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा और संस्कृत साहित्य का संक्षेप में प्रस्तुत किया जाएगा।

बीज बिन्दु - भारतीय ज्ञान परम्परा, संस्कृत साहित्य

संदर्भग्रन्थसूची -

1. पाठक, डॉ. जगन्नाथ, 2000 ई.,आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास, उ.प्र. संस्कृत संस्थान प्रकाशन, लखनऊ।

2. द्विवेदी, डॉ. कपिल देव, 2004 ई., संस्कृत साहित्य का इतिहास, चौखम्बा संस्कृत संस्थान प्रकाशन, वाराणसी।

3. उपाध्याय, डॉ. बलदेव, 1958 ई., भारतीय संस्कृत साहित्य का इतिहास, काशी विश्वविद्यालय, वाराणसी।

Preservation, Conservation and Dissemination of Devbhasa

*Dr. Pravin Kr.Choudhary, DGM (Doc.),
DLF Ltd. Gurugram,

** Partha Bhattacharya,
Patent Consultant, Delhi

ABSTRACT:

Preservation and dissemination of sacred and spiritual Sanskrit language (Devbhasa)and literature (particularly Vedas) is our national responsibility. The present article dwells into the different efforts made in this direction at regional, state, and national levels. An investigative approach is also applied to study the technological application being used to preserve the literature. Effort is also being made to incorporate newer technological advancement which can be considered for better conservation, preservation and dissemination of the language and literature.

KEYWORDS

Sanskrit, Devbhasa, Conservation, Preservation, Technological Application, Dissemination

LIBRARIES AS A POWERFUL TOOL IN THE AREA OF SANSKRIT EDUCATION AND RESEARCH

Dr Pinki Malik,

Assistant Professor,

School of Education,

Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University, New Delhi

email ID - pinki@slbsrsv.ac.in

Mobile- 8130148 422

ABSTRACT

There are many gateways of knowledge like our senses, mind, learning through experiments, experience, learning by doing. Along with this one can gain variety of knowledge through different sources in education and library is one of them. Library may provide physical or digital access to material. Where various books can be found that place is called a Pustakalaya (Library). Libraries may provide physical or digital access to material, and may be a physical location or a virtual space, or both. A library's collection can include books, periodicals, newspapers, manuscripts, films, maps, prints, documents, microform, CDs, cassettes, videotapes, DVDs, Blu-ray Discs, e-books, audiobooks, databases, table games, video games, bibliographic databases, and other formats. Libraries range widely in size, up to millions of items. It also provides us a rich heritage and preserves our culture, civilization, and languages. We cannot obtain knowledge in the absence of Libraries for the specific traditional language like Sanskrit and in its research area. Libraries has rich and informative collection of both traditional and modern disciplines. Sanskrit Libraries has collection of Sanskrit Literature, Vedic Sahitya, Philosophy, Grammar, Dharmashastra, Jyotisha, Education, Puranas etc. with a unique & old collection of books a part from journals, periodicals, Sanskrit newspapers, thesis & Dissertations etc. Mostly Sanskrit Libraries have open access system for all Sanskrit researcher. Sanskrit Libraries are recognized as research centre exclusively devoted to research work on various disciplines of Sanskrit literature library and contributes as a centre of learning and knowledge enrichment especially is the field of Sanskrit. This research paper explores how Libraries are working as a powerful tool in the field of Sanskrit education and research.

Holistic Well-being in Patanjali Yoga Darshan

Nishant Goyal,
Independent researcher,
67, Sector 8, Shastri Nagar,
Meerut - 250004,
weindram@gmail.com,
+91-9456618503

Abstract

The World Health Organisation defines well-being as a positive state experienced by individuals. Similar to health, it is a resource for daily life. In Patanjali Yoga Darshan (PYD) holistic well-being is defined based on the state of mind (chitt bhoomi) of various people. For a person with Samahita chitt, well-being is defined in 2 stages: Vivek khyati (i.e. undisturbed discriminative knowledge of Prakriti and Aatma) and Kevalya. For a person with vyutthana chitt, well-being is achieved by: Pratyahara, Pranayama (i.e. 4 types of breath-holding techniques), Aasan and Yama-Niyama, especially kriya yoga. The problem with a person with vyutthana mind is that: from time immemorial, the mind has been trapped in the knots of vasanas and klesha vrittis. Antarayas are the reasons that cause vikshepa to the vyutthana chitta. When antarayas cause vikshepa various experiences co-exist with it called vikshepa-sahabhuvah. Eight anga of PYD called 'Ashtanga Yoga' help overcome the problems of Klesh vrittis, vitarkas and antarayas. Various theories, models and practices of well-being in modern literature and scientific research are summarized. Each of these aspects of well-being can be found in PYD.

Keywords: Holistic Well-being, Patanjali Yoga, positive experience, state of mind

Innovative Approaches in Knowledge Creation, Communication, and Conservation: Perspectives from Sanskrit Universities and Libraries

Akhand Pratap Rai
Research scholar,
Veer Bahadur Singh Purvanchal University, Jaunpur, UP, India

Abstract:

Sanskrit, a classical Indian language, has played a pivotal role in preserving ancient texts and fostering intellectual discourse for centuries. This paper will provide a concise overview of the innovative approaches employed by Sanskrit universities and libraries in the realms of knowledge creation, communication, and conservation. In this context, we explore how Sanskrit institutions leverage modern technologies, interdisciplinary collaboration, and cultural preservation techniques to adapt to the digital age. By examining their strategies, we gain insights into the multifaceted role of Sanskrit in the 21st century knowledge landscape and how these practices contribute to the broader field of global knowledge management and dissemination. It seeks to highlight the key philosophical, scientific, and spiritual elements that have shaped this system and showcase how it continues to resonate in contemporary society.

Additionally, the paper will explore how India's knowledge system has transcended its borders, influencing global domains like yoga, Ayurveda, philosophy, and more. In conclusion, it will underscore the vital importance of preserving and promoting this knowledge in today's world, recognizing its enduring relevance and its capacity to contribute to the well-being and enlightenment of humanity.

Key words : Classical Indian language, modern technologies, global knowledge management, yoga, Ayurveda, philosophy

संस्कृत पुस्तकालयों हेतु तकनीकी समावेशन की उपयोगिता

डॉ. अजय कुमार,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली-110016
Mail Id : ajay@slbsrsv.ac.in

सारांश :

संस्कृत विश्व की एक प्राचीनतम भाषा है। यह अधिकांश भारतीय भाषाओं की जननी एवं सम्पोषिका रही है। भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन, अध्यात्म, इतिहास, पुराण, भूगोल, राजनीति एवं विज्ञान की मूल स्रोत संस्कृत भाषा आज भी भारत का गौरव एवं प्राण है। यह जीवन्त रचनात्मकता का साक्ष्य भी प्रस्तुत करती है। राष्ट्रीय भावात्मक एकता एवं अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना के विकास में संस्कृत का योगदान विषिष्ट रहा है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के आदर्श की स्थापना करना संस्कृत की एक अनुपम देन है। अतः राष्ट्र की इस अमूल्य निधि को विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करना आवश्यक है। आधुनिक संस्कृत अन्य भाषाओं की तरह भारतीय बहुभाषिकता का एक अभिन्न अंग है। जिस प्रकार संस्कृत अन्य भाषाओं के सीखने व बौद्धिक विकास में एक बहुभाषी कक्षा में सहायक सिद्ध होती है; ठीक उसी प्रकार संस्कृत सीखने में कक्षा में सहज उपलब्ध बहुभाषिकता का उपयोग किया जा सकता है। अतः संस्कृत के महत्व का उद्घाटन पुस्तकालयों द्वारा किया जा सकता है। वर्तमान मे पुस्तकालयों की भूमिका तकनीकी के समावेशन पर निर्भर हो चुकी है। रोजमर्रा के कार्यों के लिए ऑनलाइन कनेक्ट होना एक आवश्यक उपकरण बन गया है । जैसे: काम करना, पहुँचना, जानकारी, मित्रों और परिवार के साथ संपर्क में रहना, उत्पादकता बढ़ाना, आत्म-साक्षात्कार, और आत्म-सशक्तिकरण के अन्य रूपों के साथ-साथ बुनियादी सेवाएं प्राप्त करने के लिए भी जुड़ा होना एक आवश्यकता है । इसका अर्थ उन्नत व्यक्तिगत और सामाजिक कल्याण और डिजिटल आजीविका प्रदान करना है। ऑनलाइन कनेक्टिविटी स्वास्थ्य देखभाल जैसी बुनियादी मानव सेवाओं तक पहुंचने का अधिकार और क्षमता सक्षम बनाती है । आर्थिक और व्यक्तिगत विकास के अवसर, कौशल विकास और सभी के लिए शिक्षा । यह व्यक्तियों के लिए अपनी राय और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार का प्रयोग करने के लिए एक उत्प्रेरक के रूप में भी कार्य करता है । हालाँकि, केवल कनेक्टिविटी पर ध्यान केंद्रित करने से बहिष्करण के मौजूदा स्वरूप बढ़ सकते हैं या नए बनाएं बढ़ सकते हैं. इसलिए डिजिटल समावेशन की अवधारणा को बुनियादी पहुंच से भी आगे जाना चाहिए । कनेक्ट करने के लिए संरचनात्मक बाधाओं, साथ ही ऑनलाइन संचालन के खतरों और जोखिमों पर चर्चा करें । विशेष रूप से संकट या संघर्ष से प्रभावित लोगों जैसी कमजोर आबादी के लिए । ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म और सेवाओं तक पहुँचने के असमान अवसर असमानताओं को और गहरा कर सकते हैं, और ऑनलाइन पहुंच के लाभ हमेशा समान रूप से वितरित नहीं होते हैं। सार्थक पहुंच के लिए महत्वपूर्ण है। बुनियादी इंटरनेट कनेक्टिविटी तक पहुँचने से परे सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक सशक्तीकरण भी मजबूत हो इसलिए डिजिटल विभाजन को कम करने की जरूरत है।

बीज शब्द**(Keywords) :** पुस्तकालय, तकनीकी, समावेशन ।

भारतीय ज्ञान प्रणाली में पर्यावरण चिंतन

डॉ. शिवदत्त आर्य

सहायक आचार्य

शिक्षापीठ

श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि.वि., नई दिल्ली

सारांश

भारतीय संस्कृति मूलतः प्रकृति पूजक रही है। हमारे वेदों, उपनिषदों, पुराणों एवं लगभग समस्त प्राचीन ग्रन्थों में वृक्षों की वन्दना की गयी है। जीव जन्तुओं को विभिन्न देवी देवताओं का वाहक बताकर उन्हें भी पूजनीय बना दिया गया। पुराणों के अनुसार नदियों एवं पर्वतों को भी पूज्य एवं आदरणीय बताया गया है। पञ्चभूतों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए संस्कृत साहित्य में इनकी स्तुति की गयी है तथा उन्हें देवता मानकर धार्मिक भावना से जोड़ा गया है ताकि वे लोक आस्था का विषय बने रहें।

वेद हमारी भारतीय परंपरा के आधारभूत स्तंभ है।इसके अंतर्गत मानव जीवन के साथ-साथ प्राकृतिक जीवन से संबंधित कल्याणपरक चिंतन किया गया है। वर्तमान संदर्भ में चहुंमुखी उन्नति के लिए वेद एक ऐसा मार्गदर्शक के रूप में सहयोग कर सकता है। जिससे एक धर्ममय सब के अनुकूल वातावरण का निर्माण किया जा सकता है । वर्तमान में पर्यावरण संबंधी अनेक समस्याएं विश्व के समक्ष उपस्थित है ।उनके निवारण के लिए वेदों में सन्निहित पर्यावरण चिंतन अत्यंत लाभकारी हो सकता है । इसी विषय से संबंधित इस पत्र में विस्तार से चर्चा की जायेगी।

बीज बिन्दु- भारतीय संस्कृति, भारतीय ज्ञान प्रणाली, पर्यावरण, प्राकृतिक जीवन, भारतीय परम्परा, संस्कृत साहित्य

Impact of AI Solutions in Libraries: An Introduction to ChatGPT

Mr. Kumar Rohit[1] and Mr. Mohit Kumar Verma[2]

Assistant Librarian, Email id- rohitgupta1991@gmail.com, Central Sanskrit University, Shri Ranbir Campus, Kot- Bhalwal, Jammu (J&K)

Scientific Officer, Mahamana Pandit Madan Mohan Malviya Cancer Centre, Varanasi

Abstract

Objective: ChatGPT is an AI tool developed by OpenAI, which stands for Generative Pretrained Transformer and is based on the Large Language Model (LLM). ChatGPT uses artificial intelligence and machine learning to automate tasks, generate responses, and use prompt engineering to generate the desired responses from the users. This paper discusses about the ChatGPT and can play a vital role in libraries as well as for librarians to face the challenges and consider the reduction of workload. And to be aware of the perception and concept of ChatGPT 3.5 and to uncover how working professionals parallel to this technology can improve their scholarly knowledge, user engagement, and satisfaction.

Methodology/Approach: The author researched and approached different literature related to ChatGPT and other AI tools, tried to understand the software tool ChatGPT 3.5, and also experimented with different tools that can be used in academic and institutional libraries. It is important to understand AI tools that may advance librarianship in academic libraries and to determine the possibilities of ChatGPT that can either improve or replace the existing library system in higher educational institutions.

Originality: This paper is a descriptive study that introduces ChatGPT, Galle-E-3, and many other features of AI tools.

Findings: This paper summarizes that ChatGPT can be helpful for libraries in achieving customer satisfaction by providing self-service user interaction AI tools to get their desired query solution. There may be challenges for librarians in adopting ChatGPT in their libraries, and they may also be a threat to themselves in some ways.

Keywords: ChatGPT, Galle-E3, Language Learning Model, Artificial Intelligence, ChatGPT3.5, Chatbots

“संस्कृत पुस्तकालयों का प्रौद्योगिकी समावेशन।“

“Technology inclusions of Sanskrit libraries”.

Akanksha shree

Research Scholar, Central Sanskrit University, New Delhi

8802205541, shreeakanksha130@gmail.com

सारांश

पुस्तकालय ज्ञान का भण्डार होते है क्योंकि वहां ज्ञान के विभिन्न साधन मुद्रित रूप में उपलब्ध होते है। सामान्यतः भारतीय परिपेक्ष्य में देखें तो ज्यादातर पाठक ज्ञान के साधन को समक्ष रखकर ही पढ़ना पसंद करते हैं। जब तक पुस्तकादी का स्पर्श न किया जाए तब तक पाठक सीधे तौर से स्वयं को ग्रंथों से जोड़ नही पाते थे। यह स्थिति आज से लगभग 5-7 वर्ष पहले तक तो स्पष्ट दिखाई पड़ती थी। अचानक देश में डिजिटल प्रौद्योगिकी और इंटरनेट कनेक्टिविटी की खोज के साथ पुस्तकालय परिदृश्य भी तेजी से बदलता नज़र आ रहा है। भारत एक विकासशील देश है। देश के वैश्विक स्तर के विकास हेतु वर्तमान विकसित देशों के साथ कंधे से कंधा मिला कर चलना आवश्यक ही भी चुनौतीपूर्ण हो गया है। हालांकि भारत में इसके लिए बड़े बड़े आईटी, आईआईटी, मेडिकल आदि शैक्षणिक संस्थान भरपूर कोशिश कर रहे है और कुछ हद तक इन्होंने सफलता भी पाई है। परंतु इसका औसत अभी भी बहुत कम है।

प्रस्तुत शोध के मुख्य बिंदु निम्नलिखित होंगे :-

- आवश्यकता है भाषाई विश्विद्यालयों के पुस्तकालयों का पुनरुत्थान। यह आज के दौर में किस प्रकार प्रौद्योगिकी समावेशन के लिए तैयार है और किस दिशा में कार्य कर रहा है इस पर प्रस्तुत शोध में प्रकाश डाला जाएगा।
- भौतिकी रूप से उपलब्ध डेटा का डिजिटल रूप में संरक्षण के क्या आधार है।
- डिजिटल पुस्तालय किस प्रकार सूचना और ज्ञान के विस्तार में सहायक हो सकते हैं।
- संस्कृत पुस्तकालयों के प्रौद्योगिकी समावेशन हेतु भारत सरकार की परियोजना तथा सहायक संस्थान।
- वित्तीय सहायता की अनिवार्यता।

अतः इस शोध में निम्न सभी बिंदुओं पर प्रकाश डाला जाएगा। और अंततः यह बताने का प्रयास होगा की संस्कृत पुस्तकालयों का प्रौद्योगिकी समावेशन क्यों जरूरी है।

मुख्य शब्द-डिजीटल प्रौद्योगिकी, इंटरनेट कनेक्टिविटि, प्रौद्योगिकी समावेशन।

भारतीय ज्ञान परम्परा और लोकतंत्रीय विमर्श

डॉ अमर बहादुर शुक्ल,
सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग
महेश प्रसाद सिन्हा साइंस कॉलेज
(बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय)
मुजफ्फरपुर, बिहार
मो. नं. 8527944722
ईमेल: abshuklajnu@gmail.com

एशिया में भारत का स्थान ऐसे प्रकाश पुंज के समान है जो न केवल एशिया वरन सम्पूर्ण विश्व के लिए स्वतंत्रता, समानता, बन्धुत्व और न्याय जैसे सार्वभौमिक मूल्य प्राचीन काल से आधुनिक समय तक विश्व के समक्ष बसुधैव कुटुम्बकम के आदर्श रूप में स्थापित रहें है. भारतीय संस्कृति में ज्ञान और शिक्षा का उद्देश्य उत्तरदायित्व बोध से परिपूर्ण नागरिक निर्माण से राष्ट्र निर्माण की दिशा में सतत गतिमान रहा है. भारत राष्ट्र केवल एक भौगोलिक इकाई न हो कर ज्ञान, परम्परा, संस्कार, मर्यादा, शील, कौशल, पुरुषार्थ और आदर्श की भूमि रही है. प्राचीन धर्म ग्रंथों में इसकी महानता का वर्णन मिलता है जिसे उधृत करते हुए भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपयी ने इसे एक जीवंत राष्ट्रपुरुष की संज्ञा दी गयी है. भारतीय संस्कृति में समाहित इसके समस्त मूल्यों- जिनमें ज्ञान शील एकता, त्याग और न्याय के आदर्शों को सामान्य जनमानस में श्रुतियों और स्मृतिओं के माध्यम से सनातन रूप में प्रतिबिंबित रही है. कालांतर में बाह्य आक्रान्ताओं और अंग्रेजी हुकूमत के आधिपत्य के अनेकों वर्षों के परिणामस्वरुप भारतियों की शिक्षा और संस्कृति पर हुए कुठाराघात से जन चेतना में ह्रास और आत्मविश्वास में भयंकर गिरावट देखी गयी जिसके फलस्वरूप भारत के मान सम्मान और प्रभाव में अवनति स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुई. स्वतंत्रता पश्चात् लोक्तान्त्रतिक शासन व्यवस्था अपनाने पर यह प्रासंगिक है की स्वतंत्रता और लोकतंत्र का वास्तिविक महत्व समझने के लिए हमें पुनः भारत की ज्ञान परम्परा को जनसामान्य में प्रतिस्थापित करना अत्यंत आवश्यक है. भारत को लोकतंत्र की जननी कहा जाता है जिसका साक्ष्य प्राचीन भारत के वैशाली, लिछिवी आदि गणराज्यों की शासन व्यवस्था में देखने को मिलता है. इस शोध पत्र के माध्यम से उन सभी स्रोतों की समीक्षा की जाएगी और उन्हें प्रकाश में लाया जायेगा जिसे भारतीय ज्ञान परंपरा और लोकतंत्र के अंतर्गत अध्ययन करना समीचीन होगा.

प्रमुख शब्द: भारतीय ज्ञान परम्परा, राष्ट्र, शिक्षा, संस्कृति, लोकतंत्र, शासन-प्रशासन, आदि

Purificatory Rituals and Cultural Conservation: A Scientific Re-evaluation

Dr. Anand Burdhan
School of Heritage Research & Management
Dr. B.R. Ambedkar University Delhi

Abstract

The Canonical 'Sanskrit Literature' provides a large corpus of information on conservation and construction of temples and other religious edifices. Interestingly, the methods of conservation contain vital significance in terms of conservation of heritage structures. Grand rituals like *Kumbhabhisekam* and *Tirumanjanam* practised respectively by Siva and Vishnu temples are herbal methods of consolidation and cleaning that require a scientific re-evaluation. Already, researches on *Pachamritasnana* and *Karpurahoma* have been done by world's leading research centres that have brought to light new facts about indigenous methods of conservation. Apart from buildings, ancient scholars evolved methods for preservation of manuscripts and metallic images as well. The system of temple-storage, ritual-fumigation, purificatory rites and above all, cultural conservation played dynamic role in preserving our heritage property since time-immemorial. This paper envisages all major aspects of indigenous heritage conservation.

It also examines and presents a report on bio-chemical aspects of herbal materials that play effective role in removal of salt accretion, deacidification, cleaning of soot deposition and elimination of microbials that are factors responsible for depletions, cracks and weathering of construction materials.

The objective of this paper is to elaborately discuss the ritual methods and make an appeal to Indian museums and cultural organisations adopt herbal methods of conservation as per their need and suitability. The context of the paper is based on 'participatory observation method' adopted by the presenter of the papers and his constant work on this subject with leading research laboratories of the country.

संस्कृत साहित्य संरक्षण में प्रौद्योगिकी एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग

अशोक(शोधच्छात्र) साहित्यविभाग
केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालय,नवदेहली
मो०न०-9729773465
Ashoksamskrit97@gmail.com

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और प्रौद्योगिकी के एकीकरण से संस्कृत-साहित्य के संरक्षण में काफी फायदा हो सकता है । यहां कई तरीके दिए जाएंगे जिनसे इन उपकरणों को नियोजित किया जा सकता है-

प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों को डिजिटल बनाने के लिए ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकग्निशन (ओसीआर) और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (एनएलपी) एल्गोरिदम का उपयोग करें । इससे साहित्यिक कृतियों के आसान भंडारण,पुनर्प्राप्ति और प्रसार की सुविधा मिलती है ।

संस्कृत ग्रन्थों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद करने के लिए मशीनी अनुवाद मॉडल लागू करें, जिससे सामग्री वैश्विक दर्शकों के लिए अधिक सुलभ हो सके । जटिल या अस्पष्ट छंदो की व्याख्या के लिए ए आई मॉडल विकसित करें, जिससे विद्वानों को संस्कृत साहित्य की बारीकियों को समझने में सहायता मिलेगी।

प्राचीन पांडुलिपियों की विस्तृत छवियों को कैप्चर करने के लिए डिजिटल स्कैनर और कैमरे जैसी उच्च-रिजॉल्यूशन इमेजिंग तकनीकों का उपयोग करें। इसके बाद एआई को आभासी बहाली और संरक्षण प्रयासों के लिए लागू किया जा सकता है।

विभिन्न संस्कृत ग्रन्थों, लेखकों और अवधारणाओं के बीच सम्बन्धों को मैप करने के लिए ज्ञान ग्राफ बनाएं। यह शोधकर्ताओं को संस्कृत साहित्य के विशाल भंडार के माध्यम से नेविगेट करने और इसकी परस्पर प्रकृति को समझने में सहायता कर सकता है। संस्कृत साहित्य से सम्बन्धित भौतिक कलाकृतियों, जैसे प्राचीन पांडुलिपियों, मूर्तियों और कलाकृतियों को एक
आभासी स्थान में संरक्षित करने के लिए, 3-डी स्कैनिंग और मॉडलिंग प्रौद्योगिकियों को लागू करें। गहन अनुभव बनाने के लिए संवर्धित वास्तविकता (एआर) और आभासी वास्तविकता (वीआर) अनुप्रयोगों का उपयोग करें जो उपयोगकर्ताओं को संस्कृत साहित्यिक विरासत का पता लगाने और उसके साथ बातचीत करने की अनुमति देते हैं ।

संस्कृत श्लोकों के सही उच्चारण को संरक्षित करने के लिए वाक् पहचान तकनीक का उपयोग करें। यह संस्कृत साहित्य से जुड़ी मौखिक परम्पराओं की अखंडता को बनाए रखने के लिए मूल्यवान हो सकता है।

इन प्रौद्योगिकियों को एकीकृत करके, संस्कृत साहित्य के संरक्षण को बढ़ाया जा सकता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि ये मूल्यवान सांस्कृतिक और साहित्यिक खजाने न केवल संरक्षित हैं बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी अधिक सुलभ हैं।

निष्कर्ष - निष्कर्ष रूप से यह कहना चाहूँगा कि आज के तकनीकि युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रयोग से विभिन्न माध्यमों द्वारा संस्कृत साहित्य का संरक्षण एवं संवर्द्धन कर सकते हैं। यह एक अभिन्न एवं नवीन विषय है जिसका उपस्थापन मैं यहाँ करने का प्रयास करूंगा। कृपया मुझे अपना शोध-पत्र प्रस्तुत करने का सुअवसर प्रदान करें।

भारतीयज्ञानपरम्परायां कालतत्त्वविमर्शः

लिपि पात्र

शोधच्छात्राः,न्यायविभागः

श्री.ला.ब.शा.रा.सं.वि

Email -patralipi471@gmail.com

कालशब्दः 'कल' धातुना निष्पद्यते ' कालयत्यायुरित्यर्थबोधकः यद् वा कलयति सर्वाणि भूतानि इत्यर्थ बोधकाश्च। काल इति शब्दः सर्वैर्ज्ञायते। एतदतिरिच्य कालस्यानेकेऽर्थाः भवन्ति परं समयोऽपि कालस्यैवार्थः स्वीक्रियते । समयस्तु जन्ममरणयोः साक्षी भवति । एवं समय कालो वा जन्मनः पूर्व पश्चादपि विद्यते यद् वयं समयं कालं वा विद्मः । कालः सर्वथा परिवर्तते प्रतिपलं न तिष्ठतीति मन्यते । अस्यैवान्तर्भूताः सर्वाः क्रियाः सृष्टिविषयका : जायन्ते । अयमेव काल : 'परमात्मरूपः ब्रह्मेति' गीयतायामपि कालः कालयतामस्मि इति भगवान् श्रीकृष्ण : कथितवान् ।

काल : शून्यतः प्रकटी भवति , ब्रह्मणः सत्ता: शून्यमाध्यमेन परिचीयते । यावन्ति क्षणभङ्गुराणि तत्त्वानि जगति दृष्टिपथमायान्ति सर्वाण्येव कालस्यान्तर्भूतानि विद्यन्ते ।

अथ चोत्पत्तिविनाशयोश्च काल एवाऽस्ति कारणं तथा च समस्ता सृष्टिः कालस्यैव परिणामे मन्यते । जगति याचन्तः पदार्था दृष्टिगोचराः सन्ति तावन्तः सकला एव काल इति बुधैर्बोध्यन्ते । एवं कालस्य वर्चस्व तदाकाराकारवृत्तिरेव शून्यं विदन्ति विपश्चितः । अयमेव निराकारतया ब्रह्मणो सूचकोऽस्ति परं कालस्तु साकारब्रह्मणः सूचकः । इत्थं दृष्टादृष्टभूतानि सर्वाणि कालस्यैवान्तर्गतानि सन्ति ।

कालस्य नियमचक्रं समस्ते ब्रह्माण्डे व्याप्नोति । तथा च परिवर्तन कारणमपि काल एव । कालस्याधारात्वेन नियामकत्त्वेन च शून्यमेवाचक्षते तथा च शून्यमपरिवर्तनीयमस्ति । परं कालः परिवर्तनं विधत्ते शून्यं स्थिरत्वेनाधिगम्यते । खगोलभूगोलयोर्व्यापिनी सृष्टिरपि शून्यस्यैवान्तर्गता भवति । तथा च निराकारतया ब्रह्मेति संज्ञायते तदन्तर्गतो कालः समस्तानि कृत्यानि विदधाति । शून्यं रिक्तं स्थलमेतादृशो ह्याकाशोस्ति नास्ति कश्चन पदार्थो वस्तु वा विद्यते यस्य परितो न स्यादाकाश इति । एवं समग्रसृष्टौ सवत्रैव शून्यं परिलक्ष्यते । यत्र दृष्टादृष्टं जगत् समाहियते तदेव शून्यमाकाशनाम्नाख्यायते ।

"DIGITAL CONSERVATION AND PRESERVATION OF SANSKRIT HERITAGE": BRIDGING THE PAST AND FUTURE

Dr.RautmaleAnand S
Central Sanskrit University
Guruvayoor Campus Library, Thrissur -680551
dr.rautmale.anand@csu.co.in

Abstract:

The digital era has ushered in a wealth of information, offering quick access to invaluable data for decision-making across industries. However, it also presents threats to the preservation of important knowledge. This paper explores these risks and offers strategies to combat digital loss.

Sanskrit, rich in historical, cultural, and linguistic heritage, faces the peril of extinction due to changing language dynamics and limited access to ancient texts. This research investigates the transformative potential of digital technologies for conserving Sanskrit heritage. We employ digitization methods, create digital libraries, and develop learning resources to safeguard and disseminate this tradition. Challenges like data integrity and standardized metadata are addressed. These initiatives increase accessibility, fostering a renewed interest in Sanskrit among new generations. This digital renaissance bridges tradition and the modern world, ensuring the survival of this cultural and linguistic heritage. Digital preservation of Sanskrit is pivotal in safeguarding a timeless legacy and providing a dynamic platform for global dissemination. Effectively harnessed, it strengthens the connection between the past and the future, preserving a vital part of human history.

Key Words: Information explosion, Sanskrit heritage preservation: digital library, and Sustaining ability, bridging past and future.

भारतीयज्ञानपरम्परायां धर्मस्वरूपविचारः

गीताञ्जलि देइ(शोधछात्रा)
न्यायविभागः
श्री.ला.ब.शा.रा.सं.वि,
नई दिल्ली-110016

धर्मार्थकाममोक्षाख्येति चत्वारः पुरुषार्थाः भवन्ति। पुरुषार्थचतुष्टये धर्मस्य स्थानं आदौ वर्तते। धर्ममन्तरेण नार्थकाममोक्षाः संभवन्ति। अतः धर्मः मानवजीवने एकं महत्त्वपूर्णं स्थानं गृहणाति। इह जगति विराजमान धर्मस्य महती प्रतिष्ठा वर्तते। जनाः सज्जनानं समीपं गच्छन्ति। धर्मेण पापं नश्यति। धर्मे सर्वं प्रतिष्ठितम्। अत्रोच्यते–

"धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा लोके धर्मिष्ठं प्रजा उपसर्पन्ति।
धर्मेण पापमपनुदन्ति धर्मे सर्वं प्रतिष्ठितम् तस्माद्धर्मं परमं वदन्ति"।। इति।

'धृञ्- धारणे' इति धातुना 'मन्' प्रत्यये कृते सति धर्मशब्दस्य निष्पत्तिर्जायते। तथा च ध्रियते लोकः अनेन इति धर्मः, धरति धारयति वा लोकं, विद्यते यः स धर्म इति। अयं धर्मशब्दः विश्वस्य धारकरूपेण, लोकानां पालकरूपेण च स्वीक्रियते।

महाभारतानुसारं धर्मलक्षणम् –

महाभारतानुसारं धर्मो भवति जनानां धारकः पालकश्च। अतः जगद्धारक तत्त्वानि एव धर्माः भवन्तीति शास्त्रेषु गीयते। तथा च प्राप्यते –

"धारणाद्धर्ममित्याहुः धर्मो धारयते प्रजाः।
यत्स्याद्धारणसंयुक्तं स धर्म इति निश्चयः।।"

मनुस्मृतिदिशा धर्मस्वरूपविचारः –

मनुस्मृतेः द्वितीयाध्याये धर्मलक्षणं विविच्यते, "**वेदोऽखिलो धर्ममूलम्**" इति मनुवचनेन धर्मस्य मूलं वेद एव। स च वेदः सर्वासां विद्यानां मूलभूतः। तत्र अष्टादशविद्याः भवन्ति। तथाहि-

"अङ्गानि वेदाश्चत्वारो मीमांसा न्यायविस्तरः।
धर्मशास्त्रं पुराणञ्च विद्या ह्येताश्चतुर्दश।।
आयुर्वेदो धनुर्वेदो गान्धर्वश्चेति ते त्रयः।
अर्थशास्त्रं च विज्ञेयं विद्या ह्यष्टादशैवतु।।"

एताषु विद्यास्थानेषु सर्वासां विद्यानामाधारभूतः वेद एव इत्यत्र नास्ति वैमत्यम्। तत्र अपौरुषेयवाक्यं वेदः। वेदस्य पुरुषकर्तृत्वं नास्ति, अत वेद अपौरुषेयो भवतीति धर्मशास्त्रकाराणामभिमतम्। सर्वज्ञानमयो वेदः। अतः भगवतमनुना भणितं यत् –

"यः कश्चित् कश्यचिद् धर्मो मनुना परिकीर्तितः।
स सर्वोऽभिहितो वेदे सर्वज्ञानमयो हि सः।।" इति।

अनेन ज्ञायते यत् सर्वस्य ज्ञानस्य निधिभूतो वेद एव। धर्मस्य चतुर्विधलक्षणं मनुना भाषितम्। तथाहि –

"श्रुतिः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।

एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।।"

धर्मस्य साक्षात् चतुर्विधं लक्षणं भवति। तच्च वेदः, स्मृतिः, सदाचारः, स्वस्य च प्रियमात्मनः इति। अर्थात् श्रुतिशब्देन वेदस्य ग्रहणं भवति। वेदप्रतिपादितानुसारं यदि कर्म क्रियते स एव धर्मः। तथाचोच्यते मीमांसायां **"वेदबोधितेष्टसाधनातको धर्मः इतु"**। अर्थसंग्रहेतु **"यागादिरेव धर्मः"**। एतत्सर्वमभिलक्ष्य मीमांसासूत्रकारो निगदति - **"चोदना लक्षणोऽर्थः धर्मः"** इति। स्मृति पदेन धर्मशास्त्रस्य ग्रहणं भवति। श्रुतेरनुकरणं धर्मशास्त्रं करोति। धर्मशास्त्रविहितकर्मण धर्मत्वम्। श्रुति-स्मृतिनिषिद्धकर्मणः अधर्मत्वमिति शास्त्रकारैः समुद्घोषितम्। एवञ्च धर्मस्य लक्षणावसरे धृति क्षमादमोऽस्तेयादि भेदैनैव धर्मलक्षणं दशविधं भवतीति इति मनुना प्रोक्तम्। उक्तञ्च –

"धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।" इति।

एते धृत्यादयः धर्मपदवाच्याः भवन्ति। एतेषां धर्माणां लक्षणं अग्रे वक्ष्यते। वस्तुतः एतानि धर्मलक्षणानि जीवनस्य आधारभूतानां भवन्ति।

प्राचीनभारतीय ज्ञानपरम्परा एवं संस्कृति

प्रो. जवाहरलाल,
सर्वदर्शन विभाग,
श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली

भारतीय ज्ञानपरम्परा अद्वितीय प्रज्ञा का परिचायक है। भारतीय ज्ञान परम्परा की विशेषता है कि इसमें जीवन के विविध पक्षों के साथ साथ अलौकिक सन्दर्भों का, कर्ममीमांसा के साथ धर्मविचार का, भोग के साथ साथ त्याग के प्रवृत्तियों का अद्भुत् समन्वय देखने को मिलता है। बैदिक ऋषि एक ओर – कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं शमाः का उपदेश करता है वहीं दूसरी ओर सा विद्या या विमुक्तये के द्वारा मोक्ष तथा मोक्ष के उपाय का भी निर्धारण करता है। वैदिक ऋषि ज़हाँ एक ओर लोक को लौकिकालौकिक पथ प्रदर्शन कराता है वहीं असदो मा सद्गमय , तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मामृतं गमय । की ओर प्रेरित करता है। समग्र विश्वव को एक परिवार समढ कर सटीक उपदेश देने में सामर्थ्य यदि किसी में है तो भारतीय ज्ञान परम्परा मं ही है। जैसे अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसां। उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।। इस प्रकार समग्र विश्व को अपना परिवार समझकर पारिवारिक भावना के विकास में उन्मुख करता है। कालिदास के अभिज्ञान शाकुन्तल में इसका जीवन्त उदाहरण मिलताहै जहां ऋषि कण्व शकुन्तला की विदाई करते हैं तो उसे उपदेश देते हुये कहते हैं कि – शुश्रुषस्व गुरुन्कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नी जने। भर्तुः विप्रकृतापि रोषणतया मास्म प्रतीपं गमः। भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी। यान्त्येव गहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः। अद्भुद् उपदेश है। जो आज के समाज – परिवार के लिये नितान्त उपादेय है।

प्राचीन काल में भारतीय शिक्षा प्रणाली परम्परा पारम्परिक दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध थी इसका उद्देश्य लौकिक उन्नति के साथ साथ आध्यात्मिक उन्नति अधिक थी परन्तु आज लौकिक उत्कर्ष पर अधिक बल दिया जाने लगा यही कारण है कि आज आत्मिक उत्कर्ष को विकसित करने तथा सामाजिक समरसता को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली की जमीनी स्तर पर आवश्यकता महसूस किया जाने लगा है। भारतीय मनीषा सदैव - मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम् को चरितार्थ करते हुये देखा जाता रहा है। परन्ति आज उसके विपरीत आचरण से समाज कलुषित होता दिख रहा है। भगवान् श्रीकृष्ण श्रीमद्भगवद्गीता में संकेत करते हैं हैं कि न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते। तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति। इस मर्त्यलोक में ज्ञान-अध्ययन चिन्तन मनन ही एक मात्र साधन है जो प्राणी को नितान्त शुद्ध बुद्ध स्वभाव कर सकता है। तथा ज्ञान के लिये निष्काम कर्म प्रथम सोपान है। इसी लिये मनसे- वचव से और कर्म से प्रत्येक प्राणी एक रूपता हो इसकी शिक्षा भी भारतीय संस्कृति सिखाती है। भारत एक तपोनिष्ठ कर्मभूमि का धरोहर है। जिसकी परम्परा अनादिकाल से चली आ रही है। कोई ऐसा ज्ञान-विज्ञान की चर्चा वैशिविक ज्ञान प्रणाली में नही है जिसके विषय में प्राचीन भारतीय ज्ञानपरम्परा में विचार न किया गया हो। इसीलिये यह परम्परा अद्वितीय प्रज्ञा की परम्परा कहने में कोई अतिशयोक्ति नही होगी।

आधुनिक दृष्टि से भी जन मानस को - अपरीक्ष्य न कर्तव्यम् कर्तव्यम् सुपरीश्रियतम् इत्यादि वाक्यों के द्वारा आचार्यों ने सतर्क करने का प्रयास किया है। क्योंकि आने वाला समय भयावह होगा इसका अनुभव पूर्व में ही आचार्यों ने कर लिया था यही कारण है कि उन ऋषियों का उपदेश को जीवन्त रखने कि लिये इस प्रकार के संगोष्ठियों सम्मेलनों का आयोजन करके भारतीय मेधा पुनः प्राचीन ज्ञानपरम्परा को सजीव करने का प्रयास कर रहा है। इसका विस्तृतविवरण शोधप्रबन्ध में किया जायेगा।

RESOURCE SHARING AND NETWORKING OF CENTRAL SANSKRIT UNIVERSITY LIBRARIES IN INDIA:A COMPREHENSIVE OVERVIEW

JaykrushnaKamila
Professional Assistant, Central Library
Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University
jaykrushna@slbsrsv.ac.in
Mob. 7837755433

ABSTRACT:

Resource sharing and networking have become an integral part of modern libraries, due to the advancements in Information, Communication, and Technology (ICT). By utilizing ICT, it has become easy for libraries to establish resource sharing &networking and to quickly share their information resources without any geographical boundaries. The concept of resource sharing and networking has become increasingly popular in the past few years and has emerged as the "state of the art" in library cooperation. The purpose of resource sharing and networking is to enable libraries to benefit from cost savings, access to resources not available in their own library, and to develop their skills in order to make the best use of the resources available. In addition, it also helps to reduce the burden on library funds. This paper will focus on the resource sharing and networking of central Sanskrit University Libraries in India in the modern library technological environment. The present paper will examine the different aspects of resource sharing & networking and how these can be utilized by libraries to improve their services. Discussion will also be there regarding the various benefits of resource sharingand networking, such as cost benefits, access to resources, and improved skills. Finally, the paper will focus at the importance of resource sharing and networking in order to ensure that libraries remain up-to-date with the latest technological advancements. In conclusion, resource sharing and networking is an essential part of modern libraries.

Keywords: Networking, Resource Sharing, ICT, Central Sanskrit University Library, Library Cooperation etc.

भारतीय ज्ञान परंपरा में योग की प्रासंगिकता

- **डॉ कैलाश चन्द मीणा**
सहायक आचार्य (शिक्षापीठ)
श्री ला.ब.शा. रा.सं.वि.वि, नई दिल्ली-110016
ई मेल- drkcmeena2013@gmail.com

शोध सारांश –

भारतवर्ष में योग का उदभव हजारों साल पहले हुआ । यहाँ तब से लेकर आज तक न्यूनाधिक अभ्यास अनवरत चला आ रहा है। पाश्चात्य देशों में पहले इस पर ध्यान नहीं दिया जाता था लेकिन वर्तमान में इस पर वैचारिक मंथन प्रारंभ हुआ कि जीवन में शांति कैसे मिले, इसके लिए योग का उपयोग किया गया अनेकों अनुसंधानों से पता चला कि योग एक शांति पथ है , जीवन शैली है जीवन विज्ञान है, जीवन जीने की कला भी है। योग का उद्देश्य सर्वांगीण व्यक्तित्व का विकास, संयमित शांत व संतुलित जीवन , स्वस्थ समाज का निर्माण एवं परम तत्व की अनुभूति है। योग जीवन में मन और मस्तिष्क में ऊर्जा शक्ति और सुन्दरता को जोड़ता है ।

महर्षि पतंजलि ने चित्तवृत्ति निरोध को योग माना गया है । पतंजलि के योग के सारे सूत्रों का यदि निचोड़ निकाला जाए तो तीन सूत्रों में पूरा सार निकल जाता है योग चित्तवृत्ति निरोध। उसके लिए अभ्यास एवं वैराग्य आवश्यक है फिर दृष्टा अपने स्वरुप में अवस्थित हो जाता है "योगश्चित्तवृत्ति निरोधः" अर्थात चित्त की बहिर्मुखी वृत्तियाँ जो विषय भोगों में लिप्त रहती हैं उन्हें अपने विषयों से अंतर्मुखी करना अर्थात अपने कारण चित्त में लगाना ही योग है। चित्त- चित्त में चेतन, अवचेतन और अचेतन तीनों तल सम्मिलित होतें है चेतना के तीनों तलों की समग्र अभिव्यक्ति को चित्त कहा गया है । वृत्ति- यानि गोलाई अतः हमारे चित्त में वृत्तियाँ गोलाकार रुप से चलती रहती है चित्त वृत्तियाँ विचार तरंग के रूप में होती हैं जो निरंतर अपना प्रभाव चित्त पर डाल कर उसे चंचल बनाये रखती है। निरोध-यानि अवरोध करना, विरोध करना आदि। उन वृत्तियों का विरोध से योग से अयोग की ओर ले जाती है। योग मार्ग में जाने के लिए वृत्तियों को रोका ही नहीं जाता अपितु उनकी दिशा को भी रूपांतरित किया जाता है इसलिए सर्ववृत्ति निरोध की बात नहीं आती है। इसलिए योग की अवस्था को प्राप्त करने हेतु चित्त, वृत्तियाँ और निरोध के उपायों को विस्तृत रुप से समझने के लिए अभ्यासात्मक पक्ष को दृढ करना भी आवश्यक है। अतः भारतीय ज्ञान परंपरा में योग की प्रासंगिकता तत्कालीन समय से वर्तमान काल तक रही है जिसके कारण ही योग को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी स्थान दिया गया है।

"संस्कृत की अमूल्य सम्पदा "पाण्डु-ग्रन्थों एवं पाण्डु-ग्रन्थालयों का प्रौद्योगिकी के माध्यम से संरक्षण एवं निरक्षण"

कल्पना (शोधच्छात्रा) साहित्यविभाग
श्रीलालबहादुशास्त्रीराष्ट्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालय,
नई दिल्ली
मो० न० – 9813266585
Guddophogat16@gmail.com

किसी भी भाषा,संस्कृति एवं समाज के लिए अत्यावश्यक होती है, उसकी प्राचीन सम्पदा या धरोहर । उसी प्रकार जब संस्कृत साहित्य की अमूल्य निधि या सम्पदा की बात करें तो एक मुख्य सम्पदा के रूप में हस्तलिखित ग्रन्थ व उन हस्तलिखित ग्रन्थों को संरक्षित करने का स्थान जो पाण्डु-ग्रन्थालयों के नाम से जाना जाता है, ये उनमें अहम भूमिका अदा करते है। क्योकीं हस्तलेखों एवं हस्तलेखागारों का संरक्षण बहुत ही कठिन कार्य माना जाता है । पुरानी पाण्डुलिपियों को अनेकों नुकसानदायक कीटों एवं पानी आदि से लम्बें समय तक बचाना अतीव कठिन कार्य है । "जितना मुश्किल कार्य पाण्डुलिपियों को बचाना है, उससे कहीं अधिक मुश्किल कार्य उनको ढुंढना है ।"

1. इस शोध-पत्र के माध्यम से बताना चाहूँगी की पाण्डुलिपियों को कैसे खोजा जा सकता है । तथा उनका रख-रखाव व संरक्षण कैसे किया जा सकता है । निम्नविषय का उपस्थापन करने का प्रयास करूँगी ।
2. उन पाण्डुलिपियों के रख-रखाव में पाण्डुलिपि ग्रन्थागार कैसे कार्य करते है - उपरोक्त विषय में दृष्टि ।

पाण्डुलिपियों को खोज निकालने के बाद तथा उनके पाण्डुग्रन्थागारों में रख-रखाव के पश्चात् जो मुख्य और अहम कार्य जो आज के समय का है, वह है- **प्रोद्यौगिकी के माध्यम से उनका निरक्षण एवं संरक्षण** । आज के आनलाइन व प्रौद्योगिकी के युग में किसी भी पुस्तक,पाण्डुलिपि,ग्रन्थालय या शोधपत्र इत्यादि का इन्टरनेट पर उपलबध होना अति महत्त्वपूर्ण कार्य माना जाता है ।

1. इस शोध पत्र के माध्यम से में बताने का प्रयास करूँगी की कैसे-कैसे ये सामग्री हम आनलाइन माध्यम से संरक्षित कर सकते है या कर रहे हैं ।

2. यहां मैं ये बताने का प्रयास करूँगी की हम ये सामग्री यथा - **पाण्डुलिपि, शोधपत्र,पुस्तक,ग्रन्थालय** आदि आनलाईन माध्यम से इन्टरनेट से कैसे प्राप्त कर सकते।

निष्कर्ष - निष्कर्ष रूप से यह कहना चाहूँगी की आज के इस आनलाईन भरे युग में हम अपनी प्राचीन सम्पदा को कैसे प्रौद्योगिकी के माध्यम से उनका संरक्षण एवं निरक्षण कर सकते हैं । यह एक बहुत अहम विषय है । इस विषय का उपस्थापन मैं यहाँ करने का प्रयास करूँगी । कृपया मुझे अपना शोध-पत्र प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करें ।

Library Automation and Its Impact in Selected Universities of Uttar Pradesh

[1]Mr.GAURAV KUMAR JAISWAL
Research Scholar
Department of Library and Information Science
Mangalayatan University,Aligarh-202145
E-mail- gaurav.kr.online@gmail.com
Mob.No.-8115778815

[2]DR. PRAVEEN KUMAR PANDEY
(Assistant Professor)
Department of Library and Information Science
Mangalayatan University, Aligarh-202145

ABSTRACT

This article focused on the overview of library automation in DeenDayalUpadhyay Gorakhpur university Library is after the analyze the library is using many types of technology and services provide to the users like web opac, Library software, E-Resources, Digitalize, Remote Access, Library has own Website, D.D.ROM, Printer, CAS/SDI Services etc. That some technologies are not using by the DeenDayalUpadhyay Gorakhpur university Library like RFID,QR Technology etc. , the changing scenario of library management and its impact in Universities Libraries. The impact of ICT has changed the library operation and its functionality in to s fast to faster mode. Clients need not to visit shelf to shelf to find out a find out a document. They just get their documents sitting in front of a desktop automation has reduced the man power. This article will discuss about the concept the concept of automation its requirement and various components helps to automate library. Some software package has given which are available for automation purposes.

Keywords-Library Automation, ICT, Library Management System, Integrated Library System etc.

भारतीय ज्ञान परंपरा एवं संस्कृत

डॉ. ममता कुमारी,
सहायक अध्यापक,
सिंदरी कॉलेज सिंदरी, धनबाद (झारखंड)

वैश्विक चिंतन में भारत सदा से वैश्विक सभ्यता एवं संस्कृति का केंद्र रहा है। सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा का उद्घघोष करने वाले वैदिक ऋषि इस सत्य के साक्षी थे कि विश्व की प्रथम व एकमात्र संस्कृति का अभ्युदय देवात्मा हिमालय की छाया में व भारत की इसी पुण्य भूमि में हुआ था जिसे बाद में जन-जन तक पहुंचाने का कार्य परवर्ती चिंतकों विचारकों व ऋषियों ने किया। संस्कृत को भाषा विज्ञानी विश्व की समस्त भाषाओं की जननी मानते हैं। भारत और संस्कृत का संबंध सागर और उसकी लहरों के परस्पर संबंध जैसा है। संस्कृत भारत का ही नहीं बल्कि विश्व की प्राचीनतम भाषा है। इसका ध्वनि शास्त्र तथा लिपि विश्व की सभी भाषाओं से संबंधित तथा वैज्ञानिक है। संस्कृत भाषा की व्यापकता का ही प्रभाव है कि इसका अध्ययन अध्यापन विश्व के प्रयास सभी समुन्नत देश में आज भी हो रहा है। ऋषि मुनियों के उर्वर मस्तिष्क तथा आध्यात्मिक हृदय से प्रस्तुत दिव्य वाणी अनुपम ग्रंथ वेद विश्व की प्राचीनतम ग्रंथ तथा भारतीय संस्कृति की दिव्य चेतना का मूर्तरूप है। भारतीय ज्ञान परंपरा में भारतीय संस्कृति, धार्मिक विचार, गहन दार्शनिक चिंतन तथा आचार शास्त्र एवं ज्ञान विज्ञान के अनमोल तत्व संस्कृत भाषा में ही लिखे मिलते हैं। हमारे आदर्श, मान्यताओं एवं मूल्यों का स्रोत वही है जिसने हमारी परंपराओं एवं सांस्कृतिक लोक चेतना को जन्म दिया है। भारत के सभी क्षेत्रीय भाषाओं का संबंध संस्कृत से है। संस्कृत भाषा में ज्ञान विज्ञान का विशाल साहित्य उपलब्ध है। समाज और सभ्यता का प्राचीनतम ज्ञान प्राप्त करने के लिए संस्कृत भाषा का अध्ययन आवश्यक है। खगोल और भूगोल का सूक्ष्म ज्ञान सर्वप्रथम संस्कृत भाषा के माध्यम से ही प्रकट हुआ इसके अलावा दर्शनशास्त्र, चिकित्सा विज्ञान, भौतिक विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, आचारशास्त्र, न्याय तथा तर्क शास्त्र जीव विज्ञान आदि विषयों में ज्ञान प्राप्ति के लिए संस्कृत साहित्य का विशेष योगदान है। संगीत का सर्वप्रथम ग्रंथ सामवेद के रूप में मिलता है। समाजशास्त्र के क्षेत्र में मनुस्मृति अनुपम रचना है | संस्कृत में ही भारतीय संस्कृति निहित है । भारत के सभी समुदाय, सभी वर्ग, सभी समूह संस्कृति के संस्कृत के प्रति आदर भाव रखते हैं। इसलिए इसे देव वाणी कहा गया है। हमारे आदर्श मूल्यों मान्यताओं का स्रोत वही है और उसी ने हमारी परंपराओं को जन्म दिया है भारत में सभी क्षेत्रीय भाषाओं से उसका घनिष्ठ संबंध है। आर्य परिवार की भाषाओं की जननी है तथा द्रविड़ परिवार की भाषाओं की धात्री है इस तरह संस्कृत हमारे राष्ट्र की सर्वोत्तम सांस्कृतिक विरासत है। इसमें भारतीय संस्कृति के अनुपम तत्व निहित है। भारतीय ज्ञान परंपरा का विकास संस्कृत से हुआ है तथा राष्ट्रीय भावना के विकास में संस्कृत आज भी सशक्त सिद्ध होगा ।

मुख्य शब्द-वैदिक ऋषि, भारतीय ज्ञान परंपरा, आचार शास्त्र, सांस्कृतिक विरासत।

An analytical study of Epilepsy to the special reference of *Aṣṭāṅgahṛdaya*

Manashi Ghosh , PhD student

School of Sanskrit and Indic Studies

Jawaharlal Nehru University, New Delhi, India

*manashi.ghosh2505@gmail.com

- Introduction

Infinite numbers of people suffer from many kinds of mental illnesses. The minds (*mana*) not only the way to perceive consciousness but is also a principle of human health. Mental health dwells with the stability of mind, happiness, social well-being, and expected behavior. In ancient India, we had 14 knowledge systems; *Āyurveda* is one of them. As such *Āyurveda* not concerned only with the cure of diseases but also has described relative humanity from all the categories of misery i.e. physical, mental, emotional, and spiritual. There are three main treaties in *Āyurveda*, known as *Bṛhattrayī* (*Carakasaṃhitā, Suśrutasaṃhitā, Aṣṭāṅgahṛdaya Saṃhita*). Other is *Laghutrayi* (*Śāraṅgadhara-Saṃhitā*, *Mādhavanidānaṃ*, *Bhāvaprakāśa*).

- Aims and objective

To understand the nuances of mental health perceived in the Ancient Text *Aṣṭāṅgahṛdaya*; explores the sources and remedies, and contributions of *Ācāryas* during their time and to see how relevant it is in the world today.

- Methodology:

Analytical study method would be followed.

Result:

Vāgbhaṭa the author of *Aṣṭāṅgahṛdaya* was of *Caraka* and *Suśruta* tradition, therefore the author borrows some theories from them. The author introduces the text with a great reference regarding the mind that is rāgādi which is the prime cause of mental illness. Vāgbhaṭa also accepts the theory of '*amānuṣopasargapratiṣedhādhyāya*' (diseases for external influence) he argues *prajñāparādha* is the prime cause of mental illness. He also provides different chapters about diseases for external influence. *Vāgbhaṭa* gives broad information about alcoholic disorders and its treatment. The author introduces many new medicines which are not mentioned before by *Caraka* and *Suśruta*.

- Conclusion:

The rich tradition of Indian knowledge need to be strengthened and explored further along with modern methods largely based on western knowledge.

न्यायालये न्यायाभिमतछलपदार्थस्योपयोगित्वप्रदर्शनम्

मिन्टु दे
शोधच्छात्रः, न्यायविभागः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
नवदेहली-१६

न्यायसूत्रकारेण न्यायसूत्रस्यादितमसूत्रे मोक्षप्राप्तिमार्गविषये दिशानिर्देश: कृतः । विशेषतः अस्माकं यत् प्रयोजनमस्ति तत् प्रयोजनं द्विविधं भवति । एकं भवति तत्त्वज्ञानं द्वितीयं भवति तत्त्वाध्यवसायसंरक्षणम् । अर्थात् षोडशविधपदार्थानां तत्त्वज्ञानात् मिथ्याज्ञानानां निवृत्तिक्रमेणैव परामुक्तिरूपं निःश्रेयसं सम्भवति । न्यायसूत्रकारेण उल्लिखितसूत्रे छलनामधेयपदार्थस्य ग्रहणमपि प्राप्यते । अतः निःश्रेयसलाभे छलपदार्थस्योपयोगित्वमपि अस्ति । यतोहि वचनविघातोऽर्थविकल्पोपपत्त्या छलम् भवति , साधर्म्यवैधर्म्याभ्यां प्रत्यवस्थानं जातिः भवति, विप्रतिपत्तिरप्रतिपत्तिश्च निग्रहस्थानम् भवति इति यदुक्तं, तत्तु असदुत्तरात्मकं भवति । तत्रापि किं भवति -स्वकीयवचनस्य विघटनं भवति । एवञ्च साधर्म्य-वैधर्म्याभ्याम् अन्येषां वचनानां तु तत्र प्रत्यवस्थानं भवति । एवञ्च विप्रतिपत्तिरप्रतिपत्तिश्च निग्रहस्थानं भवति एतानि तु पराजयनिमित्तकानि भवति । तर्हि अत्र तु उत्तरात्मकत्वं नास्ति । अतः क्रमपूर्वकं हेवाभासस्यालोचनाद् अनन्तरमेव अपि च जातेः आलोचनाद् प्रागेव छलस्य व्याख्याने आचार्याणामभिप्रायः सारल्येन उपस्थापयित्वा, तस्य विभागविषयेऽपि मतवैशम्यस्थापयित्वा न्यायालये तस्योपयोगित्वप्रदर्शनमपि दर्शितम् । अतः न्यायालये प्रचलितव्यवहारे वक्तुरभिप्रायार्थस्य विरुद्धार्थकल्पनेन वाद्यभिमतस्य वाद्युक्तस्य विरुद्धार्थकल्पनेन छलवादीपुरुषस्य स्ववचनम् उपस्थापनं न तु दोषावह, यदि वाद्यभिमतस्य यथार्थग्रहणे कस्यापि वधः निश्चितः भवति असत्यवचने विरुद्धार्थ कथने न कस्यापि वधः तत्र अनृतवचनं विरुद्धार्थकथनम् अभ्यनुज्ञायते । अतः न्यायालये अपि वाक्च्छलादि-छलसामान्यस्य प्रयोजनवशात् छलदिनापुरुषेण उपस्थापितस्य वाद्यभिमतस्य विरुद्धार्थकल्पने सम्मतिं प्रयच्छति । अतः शास्त्रे अङ्गत्वेन अन्तिमपदार्थत्रयः वर्णितः, वादे तु छलस्य प्रयोगनिषेधः न तु सार्वजनिकः । तत्रापि कथायां च्छल-जाति-निग्रहस्थानानाम् उपादेयत्वं विद्यते । न्यायोक्ततत्त्वानां न्यायालये न्यायाभिमतछलपदार्थस्य वर्तमानसन्दर्भे यदुपादेयत्वं विद्यते तस्य विस्तृतं विश्लेषणं प्रबन्धे भविष्यतीति मे मतिः ।

Application of Web Based Technologies in Libraries: a brief study

Mr. Dheeraj Singh Negi
Research Scholar
Mangalayatan University
Extended NCR, 33rd Milestone Mathura,
Highway, Beswan, Uttar Pradesh 202145

Dr. Praveen Kumar Pandey
Assistant Professor
Mangalayatan University
Extended NCR, 33rd Milestone Mathura,
Highway, Beswan, Uttar Pradesh 202145

Abstract- "This paper main purpose the explore the Web based technologies use in library, this way to library adopt the web based totally era and use for l better library services, the users stratification. this examine with unique connection with national significance library. after the evaluation Libraries are the usage of the web generation in own services and characteristic, we are the usage of the many web technology like a QR code generation, face book , twitter, Podcasting, blogging, Tagging, Curating with RSS, Social bookmarking, Social networking, Social media, Wikis etc. "

keyword: -web Technology , blogging, Tagging , Social Bookmarking, Web 2.0, Web 3.0, Digital Library

Abstract

WEBOMETRIC ANALYSIS OF LIBRARIES OF CENTRAL UNIVERSITIES OF SANKRIT IN INDIA

Naveen Dobriyal

Research Scholar, Mangalayatan University, Aligarh

Dr. Deepmala

Assistant Professor, Mangalayatan University, Aligarh

Indian higher education institutions must enhance their collaboration with international universities to maintain their position as leading institutions. The growth of internet users worldwide over the past decade has led to a growing web-centric approach to information. Improving web policies can broaden dialogue between institutions and universities, contributing to the development of new ways of communication in the scientific community. The World Wide Web (WWW) has become a primary source of information for academic and research activities, making it an excellent platform for evaluating webometric activities. Web resources are crucial components of life, providing value-added services quickly and accurately. Web pages are essential entities of information, holding prospective and instructive linkages from general aspects to specific aspects, similar to citations. Webometric analysis scientifically demonstrates the impact and influence of web sites and web contents.

Webometrics is a scientific discipline that studies the quantitative analysis of web content and resource utilization using specific approaches. It aims to measure the World Wide Web using content analysis to understand the influence of web pages, links, and parameters. Webometrics was first invented by Almind and Ingwersen in 1997 and is an amalgamation of "web" and "metric." It aims to gain knowledge about the number and types of hyperlinks, structure of the World Wide Web, and based content using quantitative methods for social science research. Key components of webometrics analysis include web page content analysis, web link structure analysis, web usage analysis, and web technology analysis, including search engine performance.

The study examines the webometrics of central universities of Sanskrit in India and their libraries, focusing on three universities established under the Central Sanskrit Universities Act, 2020, published on the UGC website.

The study aims to conduct a comprehensive webometric analysis of Central Universities of Sanskrit in India, focusing on URL analysis, different types of links, search engine performance evaluation, domain and page authority determination, and web impact factor (WIF) calculation and ranking.

The study analyzes the web impact factor of central Sanskrit universities in India using webometric analysis. Primary data is collected through surveys and observations, using

search engines like Google, Yahoo Search, and All the Web and various online free SEO optimization tools to evaluate links, search engine performance, and domain authority.

The study found that two universities use.ac.in URLs, while only Central Sanskrit University uses.nic.in. All universities use the country code TLD (ccTLD).in. Search engine performance evaluation revealed that search expressions with gaps had more hits than without gaps. Google search showed higher results in all cases. Central Sanskrit University had the highest domain authority (44) and page authority (80), while SLBSNSU and NSUT had similar scores (12). CSU had the highest WIFs and ranked first in overall ranking.

The changing search engine facilities and lack of robust measuring instruments hinder webometrics research. Future challenges include quantitative methods like sampling web pages and links, domain authority measuring tools, and qualitative methods like web link interpretation and classification. Universities with more link pages have a greater impact factor. To improve university and library websites, universities should have distinct requirements, have their own library websites, receive feedback from the user community, and acquire expertise to navigate the technological landscape. Implementing change should be easy and accessible.

Keywords: *Central University, Sanskrit, Websites, Domain, Web Impact Factor (WIF)*

संस्कृत अनुसन्धान क्षेत्र में उपयोगी संगणकीय उपकरणों का विश्लेषण

नाम -पद्मलोचन पधान, शोधार्थी,
जवाहरलाल नेहेरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
ई मेल् -padmalochan.drive@gmail.com

अनन्त शास्त्रं बहुलाश्च विद्या अल्पश्च कालो बहुविघ्नता च।

यत्सारभूतं तदुपासनीयम् हंसो यथाक्षीरमिबाम्बु मध्यात्॥[1]

शास्त्र अनन्त हैं ,अनेक विद्यायें हैं विद्याओं के अनेक शाखा ग्रन्थ है । एवं मनुष्य के पास समय स्वल्प हैं अतः कम समय में कैसे अधिक एवं सारभूत ज्ञान एवं सूचना प्राप्त किया जा सके उसके लिये प्रयत्नशील होना चाहिये । ज्ञान प्राप्ति के सरल एवं सहज साधनों में एक उत्कृष्ट साधन संगणक एवं अन्तर्जाल के अनुशासनात्मक प्रयोग है । संगणक के माध्यम से सूचना प्राप्त करना सहज कार्य है । संगणक कौशल का ज्ञान समस्त विद्यार्थी, अनुसन्धाता को अवश्य होना चाहिये । संस्कृत भाषा के अध्येताओं के लिये यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है क्यों कि भारतीय ज्ञान परम्परायें संस्कृत भाषाओं में निहित हैं एवं उनका संरक्षण संगणकीय उपकरणों से ही सम्भव है । वर्तमान समय में समस्त क्षेत्र में संगणक का उपयोग अपरिहार्य है । संगणक के माध्यम से समस्त कार्य सुचारु सटिक एवं यथासमय सम्पन्न हो रहा है । अनुसन्धान के क्षेत्र में संगणक की भूमिका अत्यन्त महत्वपुर्ण है । किन्तु संस्कृत अनुसन्धान के क्षेत्र में संस्कृतज्ञ लोगों का संगणकीय ज्ञान के अभाव के कारण संगणक का अपेक्षित उपयोग नहीं कर पा रहे हैं, जिससे अनुसन्धान कार्य्य गुणवत्तापूर्ण एवं समुचित लक्ष्य प्राप्त करने में कोसों दूर हैं । अन्तर्जालीय सूचना (इन्टरनेट् डेटा) की कमी के कारण संस्कृत शोधकार्य के निरीक्षण करने में अभी तक कम्प्युटर प्रोग्राम पूर्णतया समर्थ नहीं है । इस शोध पत्र में संस्कृत अनुसन्धान के क्षेत्र में सहायक संगणकीय उपकरणों का विश्लेषण किया गया है एवं संस्कृतविषय के शोधकार्य में समुन्नति हेतु हम कैसे संगणकीय उपकरणों का निर्माण कर सकते हैं इस विषय में दृष्टिपात किया गया है । इसमें विश्लेषणात्मक प्रविधि का आश्रय लिया गया है तथा उपलब्ध तथ्यों का परीक्षण कर उन सबका सूचना प्रदान किया गया है । इसका मुख्य लक्ष्य शोधार्थीयों का समस्या निवारण है एवं जो संगणकीय उपकरणों की सूचना है वह समस्त लोगों को पहुंच सके ।

कूट शब्द – संगणक, डेटा *(*संगणकीय सामग्री*)*, अन्तर्जाल *(*इण्टरनेट*)*, जालस्थल *(*वेवसाइट*)*, संगणकीय उपकरण *(*डिजिटाल टुल् *)*

[1] चाणक्यनीति १५.१०.

Propagate and preservation of Sanskrit heritage by using ICT

Gyan Chand Sharma
Ph.D Scholar,
Department of Computer Application,
University of Technology, Jaipur (Raj.)

Abstract

Sanskrit is called ‘Devvani’ (language of the Gods). The word `Sanskrit' means “prepared, pure, refined or prefect”. Sanskrit is an ancient and classical language of India in which ever first book of the world Rigveda was compiled. Sanskrit language is as repository of knowledge which consist so many knowledge of art, music, dance, drama, to mathematics, astronomy, science, technology, life sciences, environment and natural sciences, health care, yoga, law, jurisprudence, economics, social sciences, psychology, philosophy, management, linguistics. In the age of science and information technology, every aspect of education is interconnected. As the most ancient branch of knowledge, it covers all those aspects which are relevant to the society at the highest level. Indian sages have preserved this knowledge tradition through their inscriptions, manuscripts and texts. Through their study scientists have preserved the world to develop new things and germinate science and technology. It is said that science and technology were quite rich in India, knowledge of aero-space technology was in India several thousand years ago, even during the Mahabharata period. The technique of design on rock and monuments is an example of the wonderful architecture prevalent in ancient India. The many monuments, palaces, temples and stepwells found throughout South-East Asia are examples of India's finest engineering technology. Now there are special courses of design in schools and universities to learn how to create such monuments but in modern times we have partially lost this knowledge tradition. Therefore it is very important to study our ancient technology, engineering, medical science, architecture, social science and many other aspects which are hidden in Sanskrit and it is our duty to preserve this ancient knowledge tradition of ours for the future generation, research into it. Do it and spread the word widely. So that India can be made a world leader.Nowadays, information technology has advanced so much that many machines are available for our convenience to make our daily work easier. For

example, how computers are interfering with our work and with us every day. In that situation, Information and Communication Technology (ICTT) can help us in preserving and propagating our ancient texts and knowledge traditions. In the era of globalization, if we want the dissemination and preservation of our ancient knowledge tradition globally, there is a need for a joint venture with information and communication technology to reconstruct its structure and make it a part of our society. To help in preserving and modernizing Sanskrit by using various tools and techniques of ICT.

Keywords: Digitization, ICT, Communication, Manuscripts, Indian Knowledge System, IIT

Marching Toward Quality Transformation: A Case Study of Central Library of SLBS National Sanskrit University

*Rajesh Kumar Pandey
Sunil Kumar Mishra

Central Library
SLBS National Sanskrit University
New Delhi
Email: rajeshpandey@slbsrsv.ac.in

Abstract:

This article analyses the role of the Central Library in the last 61 years of the University's journey so far. On the one hand, it highlights the role played by the Central Library in the preservation and communication of knowledge; on the other hand, it also discusses its affirmative position in the education and research of the university. The present paper also discusses the use of IT tools and emerging technologies in knowledge management. It delves into how it is being used to facilitate the various stakeholders of the university. It also considered the efforts made by the central library towards facilitating visually challenged readers by capitalising on modern devices and tools. The central library has played an active role in effectively managing the knowledge resources of other formats. It has also extended its extra efforts towards maintaining academic integrity in the research output of the university. The central library has been striving towards developing a digital heritage database as well. Finally, the paper concludes with future propositions for complete quality transformation.

Keyword:
Central Library-Transformation; Central Library-Quality Enhancement; Central Library-Research; Central Library-Research Management; Knowledge Management - Central Library;

Future Road Map Toward Quality Enhancement in Sanskrit Universities

Rajesh Kumar Pandey
Assistant Librarian
Central Library
SLBS National Sanskrit University
New Delhi
Email: rajeshpandey@slbsrsv.ac.in

Abstract:
The paper delves into different dimensions of education and research in Sanskrit Universities. It examines the various reports of the commissions and committees constituted by the Government of India concerning higher education. It highlights the initiatives still required to be put in place towards uplifting the quality of education and research in Sanskrit Universities. Further, it analyses the National Education Policy 2020 and explores ways and means to be acted upon. At one end, the paper emphasises exploring the pragmatic application of the Sanskrit language while keeping in view the ground reality; on the other, it presses upon the need to ensure interdisciplinary and multidisciplinary research for the better and more effective exposition of the hidden treasure of the Sanskrit language. It also highlights the impact of technologies on education and research and suggests how the emerging tools and technologies can be optimally used to create knowledge.

Keyword: Sanskrit Education; Sanskrit-Research; Sanskrit-Quality Enhancement;

The Emerging Role of Information Communication Technology (ICT) in Library Services

Dr. Sanjay Singh
Chief Librarian Central Library
Noida International University, Greater Noida, U.P
Email Id: Sanjay.singh@niu.edu.in

Today we are living in the era of digital information, which has affected all disciplines and walks of life. Likewise, ICT has also revolutionized every field of library services. In other words, we can say that ICT is playing a crucial role in library services such as the acquisition, organization, storage, retrieval, and dissemination of information services. In other words, we can say that ICT is playing a crucial role in library services such as the acquisition, organization, storage, retrieval, and dissemination of information. Today, the convergence of computer and communication technologies and their application to library services has changed the whole scenario for users. During the second wave of library computerization in 2000, the focus was on the deployment of computer networks providing access to electronic information. After that, many ICT-based services in library science were started, and they remained very beneficial for users and service providers in library and information science. The concept of ICT includes a wide range of different technologies and is the convergence of computers, communication, and micro-electronic-based techniques like radio, telephone, telegraph, fax, TV, mobile phone, telephone, internet, www, E-mail, LAN, ISDN, video conference, and satellite communication techniques. These devices play a crucial role in library services like interlibrary loans, reference services, and online information retrieval. Likewise, the ISDN technique has increased the capacity of data transmission, which has facilitated the introduction of new services such as e-mail. Moreover, cheaper data storage media have also increased the storage capacity of libraries, and due to this, effective and valuable library services have been made possible by the service provider. ICT has brought unprecedented changes and transformations to academic libraries and information centers. The impact of ICT on information services can be classified according to changes in format, content, and method of production and delivery of information for library users. In the changing scenario, the emergence of the internet as the largest repository of information and knowledge has changed the role of traditional libraries and professionals and shifted from a physical to a virtual service environment. Today, most of the libraries and information centers in India have started using computers and information communication technology in the organisation of their collections, housekeeping operations, processing, retrieval, and dissemination of information to the end users. Because of technological advancements, the use and impact of ICT are now visible in library services. The impact of ICT has made the possibility of library automation, which usually covers housekeeping operations such as acquisition, serial control, cataloging, circulation, references, and administrative work in libraries and information science, possible.

भारतीय ज्ञान परंपरा में संज्ञानात्मक विज्ञान

डॉ. सविता राय
सहायकाचार्या, शिक्षापीठ,
श्री लाल बहादुर शास्त्री
राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
नयी दिल्ली-110016

भारत की अपनी एक समृद्ध संस्कृति और परंपरा रही है। जब विश्व की अन्य सभ्यताओं का उदय भी नहीं हुआ था तब भारत के मनीषी वेदों की रचना कर चुके थे। जो समस्त ज्ञान तथा विज्ञान का सार है। भारतीय सभ्यता में हमेशा ज्ञान को बहुत महत्व दिया गया है यही कारण है कि यहां बौद्धिक ग्रंथों का विशाल संग्रह मिलता है तथा पांडुलिपियों की संख्या भी दुनिया में सबसे अधिक है। भारतीय ज्ञान परंपरा में व्यक्तित्व तथा व्यक्ति की आंतरिक संरचना, बुद्धि तथा बाह्य पदार्थों के प्रति इसकी अनुक्रिया का विस्तृत वर्णन मिलता है। भारतीय चिंतनधारा में वेद, उपनिषद, सांख्य तथा योग आदि में मानव आस्तित्व का विस्तृत वर्णन दिया गया है। न्यायसूत्र में व्यक्तित्व के विकास की विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन मिलता है। ऐतरेय ब्राह्यण ज्ञानेद्रियों के विभिन्न कार्य तथा उसके आधारों का उल्लेख करता है। छांदोग्योपनिषद् में व्यक्ति के विकास, स्वभाव एवं शिक्षण-पद्धति के वर्णन मिलते है। मांडूक्योपनिषद् में व्यक्ति की मूल प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालते हुए बालक को मूल प्रवृत्तियों का पुंज कहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा एक सुदृढ़ व्यवस्था रही है जिसमें विज्ञान, भाषा, प्रकृति तथा पर्यावरण, दर्शन जो कि स्वयं ही विभिन्न वैज्ञानिक तथा मनोवैज्ञानिक विचारों का सार है, आदि ग्रंथों की एक विशाल परंपरा मिलती है। जिनकी गुरूकुल परंपरा में तो शिक्षा प्रदान की जाती है परन्तु आधुनिक विद्यालयों में विद्यार्थियों को प्रायः इसका सम्यक ज्ञान नहीं दिया जाता। अतः यह आवश्यक है कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में विद्यालयीय शिक्षा तथा उच्च शिक्षा में सुव्यवस्थित रूप से इस ज्ञान पुंज के प्रकाश को प्रसारित किया जाये तथा अध्ययन तथा अध्यापन कराया जाये। प्राचीन भारतीय मनोविज्ञान में बहुत सी मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं पर भी प्रकाश डाला गया है जिनमें संज्ञानात्मक प्रक्रिया तथा व्यक्तित्व के विकास की अवधारणा प्रमुख है। प्रस्तुत पत्र में भारतीय परिप्रेक्ष्य में व्यक्तित्व की संरचना का भारतीय दृष्टिकोण से विवेचन करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द- संज्ञानात्मक विज्ञान, व्यक्तित्व, भारतीय मनोविज्ञान, पंचकोश।

Sanskrit Literature in the Nineteenth Century: Paradigms and Policy

Dr. Shalini Awasthi
Assistant Professor
School of Heritage Research and Management (SHRM)
Dr. B R Ambedkar University, Delhi
Email: sawasthi@aud.ac.in
Contact No.: 9891333037

I am quite ready to take the Oriental learning at the valuation of the orientalists themselves. I have never found one among them who could deny that a single shelf of a good European library was worth the whole native literature of India…

---T B Macaulay (1835)

I will not begin with the argument that Sanskrit literature is as great as the Greek literature. Why should we always compare? The study of the Greek literature has its own purpose; so has the study of Sanskrit. But I am convinced, and I hope to convince you also, ***that Sanskrit, when studied in the right spirit, is full of human interest, full of teaching, which even the Greek cannot give us****.*

---Max Möller (1882)

The two statements coming nearly forty-seven years apart, and advocating two contrasting narratives on Sanskrit literature are worth serious consideration. This paper will seek to trace the understanding and valuation of Sanskrit literature by the British in India, in the nineteenth century, culminating in Macaulay's Minutes of 1835. Macaulay's Minute are seen as a turning point in the history of the debate about the primary objectives of British Indian educational policy, which introduced learning in higher education through the English language. This paper is an attempt to study these contrasts, limited to the nineteenth century.

Keywords: British, Orientalist, Macaulay, Mueller, Sanskrit,

"नयी शिक्षा नीति: शिक्षा के सशक्त भविष्य की ओर कदम बढ़ाते हुए"

शिखा कुमारी
छात्रा
डिपार्टमेंट ऑफ़ इंटरनेशनल रिलेशन,
झारखंड सेंट्रल यूनिवर्सिटी, रांची

Abstract (सारांश):

भारत सरकार द्वारा जारी की गई "नयी शिक्षा नीति" ने शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तनों का मार्ग प्रशस्त किया है। इस नीति का उद्देश्य है शिक्षा को सुलभ, व्यक्तिगत, और गुणवत्तापूर्ण बनाना, ताकि युवा पीढ़ियाँ समृद्धि और समाज में सकारात्मक योगदान कर सकें। इस सारांश में, हम नई शिक्षा नीति के मुख्य विशेषताओं की छवि प्रस्तुत करेंगे और उसके प्रभावों की छवि को प्रस्तुत करेंगे, जो भारतीय शिक्षा तंत्र के साथ होने वाले एक उज्ज्वल भविष्य की ओर कदम बढ़ा रहे हैं। भारत की नई शिक्षा नीति, 2020, एक महत्वपूर्ण कदम है जिसका उद्देश्य शिक्षा के क्षेत्र में सुधार करना है। इस नीति के मुख्य लक्ष्यों में शिक्षा के प्रत्येक पहलू को सुधारना, छात्रों के सामाजिक और आधारिक विकास को बढ़ावा देना और अध्ययन में नवाचार को प्रोत्साहित करना शामिल है। यह नीति नई शिक्षा प्रणाली का आयोजन करती है, जिसमें 5+3+3+4 की पद्धति है और शिक्षा को सामर्थ्य आधारित बनाने का प्रयास करती है। इसमें शिक्षकों की प्रशिक्षण में सुधार, शैक्षिक प्रौद्योगिकी का उपयोग और छात्रों के लिए समग्र विकास के लिए महत्वपूर्ण उपाय शामिल हैं। इसका उद्देश्य भारत की शिक्षा नीति को मानव संसाधन विकास में महत्वपूर्ण योगदान करने का है ।

Management Approaches in the Indian Knowledge System: An Insight into Sanskrit Universities

Smita
Student

The Indian knowledge system is an amalgamation of thousands of years of wisdom, learning, and practices. Rooted deeply in Vedic and post-Vedic literature, its approaches to management have a lot to offer in today's fast-paced global environment. Sanskrit Universities, as the epicentres of traditional learning, provide a unique lens to understand these approaches and translate them into modern practices.

Historically, the Dharmashastra and Arthashastra, two significant treatises written in Sanskrit, have laid down principles related to governance, statecraft, and management of resources. Kautilya's Arthashastra, for instance, goes beyond just statecraft, delving deep into areas of economics, trade, market management, and even espionage. The focus is not just on achieving success but on ethical grounding, emphasizing a balance between material prosperity and moral integrity. Another classic example of management techniques in ancient Indian scriptures is the concept of 'Dharma'. In the broader sense, Dharma signifies duty, righteousness, and moral order. It teaches leaders to carry out their duties ethically and responsibly, taking into consideration the welfare of all. It underscores the idea that leadership isn't just about power and control, but about serving and ensuring the well-being of the people and environment. Sanskrit Universities, with their extensive curriculum on ancient scriptures, provide a grounding in these age-old principles. Unlike many modern institutions that prioritize profitability, Sanskrit Universities emphasize a holistic view of management. They teach that for any organization to sustain and thrive, its leaders must balance profit motives with ethical considerations and societal welfare.

Furthermore, the Gurukul system, historically prevalent in India and integral to Sanskrit learning, instilled discipline, mutual respect, and a sense of community among students. In this system, students lived with their teachers, imbibing not just academic knowledge but also life skills, values, and ethics. This holistic approach to learning, rooted in the Gurukul system, can offer significant insights to modern management education, emphasizing not just hard skills but also soft skills and moral values.

The methodology of teaching in Sanskrit Universities also reflects a deep understanding of human psychology. The use of stories, parables, and real-life examples in scriptures made complex concepts relatable and easier to understand. This pedagogy can be beneficial in today's management training programs, making them more effective and impactful.

This paper will explore how the Indian knowledge system offers a wealth of insights into management practices. By integrating the ethical grounding, holistic learning, and effective pedagogy of these traditional institutions, modern businesses can navigate the challenges of the contemporary world with wisdom, balance, and foresight.

Key Words : Vedic, post-Vedic literature, Dharmashastra, Arthashastra, Gurukul, human psychology

Perception towards E-resourcesand blended Method learning of ResearchScholar in Digital paradigm: A study on Jiwaji University, Gwalior

Sumit Gupta
Research Scholar, School of studies in Library & Information Science
Jiwaji University, Gwalior, 474011
+91 8564938485
guptasumit8485@gmail.com

Prof. (Dr.) J.N Gautam
Professor & Head of Department, School of studies in Library & Information Science
Jiwaji University, Gwalior, 474011
jngautam1@yahoo.com

Abstract

This article will help to understand the term Blended Learning (BL) and its components in this digital paradigm with support of e resources which have indispensable part in delivering quality services since its origin. How BL can have multiple dimensions other than the combination of face to face and online technology and how E-resources are being productive in this teaching-learning method. Previous studies were examined thoroughly and encountered with different phases of BL as well as e-resources. Distinction and connection among BL, teaching and education are explained in summarized form. Users' perception regarding access of educational material after managerial intervention in BL have been conversing gradually. Implementing BL with fullness use of e-resources in academics fulfill and ensures Sustainable Development Goal 4, Ensure inclusive and equitable quality education and promote lifelong learning opportunities for all. This article will examine engaged problems, benefits, assistance of e-resources in this digital and virtual paradigm. This is the first kind of work in which productivity of e-resources is analyzed in Blended learning. This article will be helpful for further research in BL as in near future it will be best opportunity for education managers.A study was conducted on 104 research scholars of Jiwaji University, Gwalior in which factors affecting BL, their perception towards BL, opinion regards e-resources, time spent on online or offline studies were discussed and analyzed. Major finding was respondents willing to take online classes when time period is 2 – 4 hours.

Key words –E-resources, EIR, Digital Paradigm, Blended Learning

Artificial Intelligence Technology Inclusion for Sanskrit Library

Sunanda Rana
Research Scholar
Ravindranath Tagore University
Bhopal
M - 9971784509

Abstract : - The current state of art in artificial intelligence (AI) and its potential impact for sanskrit library with AI working, learning, teaching and education. It provide conceptual foundation for well-informed policy-oriented work research. AI involved the area such as AI expert system, neural network image processing, natural language, processing speech, recognition robotics etc. when AI technology implement in libraries which enhances the quality and services and their by create the potential impact of AI on library services. AI dominant future as well as how libraries are responding to this change. A lack of response or awareness to current AI trend though a number of universities academic library found to be participating in or creating their on (AI) hubs.

Study objectives :- This study aimed to understand the level of knowledge and use of AI technology by libraries of university libraries.

1. To analyse format definitions of AI
2. To define some key technologies and explain how they might relate to library work.
3. To reflect on the potential implications for professional work and particularly equality diversity and inclusion within it.
4. To final out the AI effectiveness in library science.

Methodology :- After reading 100 papers, I have come to the same conclusion in the methodology of my research papers that till now most of the libraries are showing lack of interest in the skill of doing it After responding to many user though the google form the users are using AI (Artificial Intelligence) not telling his teachers school & colleges.

Finding :- Most libraries are unsure about the use of AI-based capabilities a means of communication with members. Based on AI as a means of communication with members. Most librarians stated that the practice is not performed. Most of the librarians interest are not showing.

Conclusion :- From intellectual freedom to information literacy and more, libraries, provide a set of principle that have helped guide intellectual growth for the past century.

But libraries are not the centre of the information world anymore. Advocacy should be directed not at maintaining traditional librarianship, but moving towards the emerging information system that may come to replace us.

Keywords :- Artificial Intelligence, Sanskrit library, Expert system, Robotics, Machine learning, AI in application, AI recommendation.

Reference :- American Library Association, Tools publication, & resources, artificial intelligence, 2019, available at; http://www.ala.org/tools/future/trends/ artificial intelligence, accessed September 3, 2019.

भारतीय ज्ञान-परम्परा

प्रो. सुन्दर नारायण झा
आचार्य, वेदविभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय
संस्कृत विश्वविद्यालय,
(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)

श्रीमद्भगवद्गीतोपनिषद् में भगवान् श्रीकृष्ण ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि- न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।[1] अर्थात् इस संसार में ज्ञान के समान कोई भी अन्य तत्त्व ऐसा नहीं है जो पवित्रता प्रदान करने में समर्थ हो। इसी कारण से संसार के समस्त यज्ञों में ज्ञानयज्ञ को श्रेष्ठ कहा गया है। यथा- श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परन्तप। सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते।।[2] अर्थात् हे अर्जुन! समस्त द्रव्यमय यज्ञों में ज्ञान-यज्ञ श्रेष्ठ है, क्योंकि जीवन के सम्पूर्ण कर्म ज्ञान में ही विलीन हो जाते हैं। उक्त वचनों से ज्ञान की महिमा को वर्णित किया गया है।

विद्-ज्ञाने धातु से वेद शब्द की निष्पत्ति कही गई है। अत एव ज्ञान शब्द के उच्चारणमात्र से सर्वप्रथम वेद का ही बोध होता है। वेदों में विश्व के समस्त ज्ञान के सूत्र विद्यमान हैं। हम भारतीय अपने को ऋषियों की सन्तान कहते हैं। फलतः भारत के सभी मानवों का कोई न कोई गोत्र अवश्य है। जिसको अपने गोत्र का ज्ञान नहीं उसका गोत्र कश्यप है, ऐसा स्वीकार किया जाता है। इसका रहस्य यह है कि वेदकालीन युग में जब इस सृष्टि का जलप्रलय द्वारा महाप्रलय हुआ था, उस समय मात्र कश्यप प्रजापति ही शेष बचे थे। उनकी सन्ततियाँ ही देव एवं दानव हुए तथा देवों से समस्त चराचर जगत् हुआ। इस प्रकार सिद्ध हुआ कि वर्त्तमान संसार के मूल ऋषि कश्यप ही हैं। वेद के मन्त्रों का साक्षात्कार ऋषियों ने किया। वे ऋषिगण भारत में ही हुए।

अतः भारतीय ज्ञान-परम्परा के मूल स्रोत हमारे ऋषिगण हैं। ऋषियों ने भारतीय ज्ञान को विकसित करने के लिए परमात्मा के निःश्वासभूत वेदमन्त्रों का दर्शन कर अपने शिष्यों को उसका उपदेश दिया। वही वैदिक ज्ञान-परम्परा अनादिकाल से आजतक भारत में चली आ रही है।

मुख्य शब्द- भारतीय ज्ञान परंपरा, वेद, उपनिषद्, ऋषि, ज्ञान-यज्ञ।

जयतु संस्कृतम्। जयतु भारतम्। जयन्तु वेदाः।

[1] गीता-4.38
[2] गीता-4.33

SLBS National Sanskrit University, Central Library – New Initiatives

Sunil Kumar Mishra
Semi Professional Assistant
Central Library,
Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University
sunilmishra@slbsrsv.ac.in

Abstract :

Mahamahopadhyaya Padmashri Dr. Mandan Mishra Central Library has been serving and supporting the academic and research activities of this Central University. This library has very rich and informative collections of both traditional and modern disciplines. The library is famous for its comprehensive coverage on Sanskrit Collection namely Vedas, Puranas, Upanishads, Dharmashastras, Yoga, Astrology, Vyakarana, Vaastu shastra, Sahitya, Darshanas, Paurohitya, Ayurveda, etc. Besides, collection on other subjects like Education, Philosophy, Psychology, Hindi, English and other contemporary discipline make this library a real treasure-trove of knowledge. The library has around more then one lakh collections on various subjects.

The central library subscribes to a large numbers of reputed journals, contemporary and popular magazines and leading national and regional newspapers. There is also a Book Bank facility for the students.

The library is using Libsys-10 as Library Management Software since 2010. After installing LMS- Libsys in the library, the retro-conversion process of books and other documents completed finally, after automation the circulation and other process is functioning thorough LMS. OPAC (Online Public Access Catalogue) was automatically functional with the usage of the software. OPAC was made available on the public network/library portal to be visible and accessed widely. Users can have access to OPAC on their mobile phones as well.

During 2020 the old version of ILMS – Libsys-7, was replaced with the latest web-centric version – Libsys 10. In addition, a fully functional Radio Frequency Identification Device (RFID) technology was adopted in 2021 to further the automation activities in the central library. The RFID technology has been integrated with the existing ILMS of the library to ensure the smooth functioning of the complete system.

Library is searching rare books from own collection which is published before around 1970, that books going through scanning & OCR process to create e-books to save this knowledge. These e-book can be accessed at University-repository in the near future.

Keyword : Library automation, RFID technology, e-books etc.

ज्ञान संरक्षण की भारतीय परंपरा

डॉ सुरेंद्र महतो
शिक्षापीठ
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली - 110016

"**मनुजस्य ज्ञानम तृतीय नेत्रम**" अर्थात ज्ञान ही मनुष्य का तीसरी आंख है जिसके द्वारा व्यक्ति का संपूर्ण विकास संभव है ज्ञान संरक्षण की विभिन्न परंपराएं, विभिन्न कालखंडों तथा विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में विविध प्रकार की रही है ज्ञान को प्राय दो भागों में विभक्त कर विद्वानों ने चर्चा की है मौखिक और लिखित, लौकिक या व्यवहारिक ज्ञान तथा वैदिक ज्ञान। दोनों ही प्रकार के ज्ञान को संरक्षित रखने के दो प्रकार के साधन हैं वैदिक और शास्त्रीय ज्ञान का संरक्षण और संवर्धन भारतीय परंपरा में गुरु शिष्य परंपरा से अथवा गुरुकुल(श्रुति अथवा मौखिक) परंपरा से होता आ रहा है। व्यवहारिक ज्ञान का संरक्षण एवं संवर्धन दादी- नानी की कहानियों द्वारा अगली पीढ़ी में हस्तांतरित करने की परंपरा रही है। लेखन कला के विकास उपरांत भारत में भोजपत्र, तालपत्र, ताम्रपत्र शिलालेख, स्तंभलेख, चित्रकला आदि के माध्यम से ज्ञान का संरक्षण एवं संवर्धन करने की भारतीय परंपरा विश्व विख्यात है। विश्व के सर्वाधिक प्राचीन वेद आदि साहित्य . हमारे समक्ष आज जिस स्वरुप में विद्यमान है वह श्रुतिपरमपरा के कारण ही। मध्यकाल में नालंदा एवं तक्षशिला विश्वविद्यालय के पुस्तकालय विश्व की समृद्ध पुस्तकालयों में से अन्यतम रहा है। वर्तमान समय में ज्ञान के संरक्षण में पुस्तक की अहम भूमिका है जो पुस्तकालय में संग्रहित एवं संरक्षित रहते हैं। आज कल के बदलते परिवेश में पुस्तकालयों के स्वरुप में भी बदलाव देखा जा रहा है। जहाँ ई-पुस्तकालय, वर्चुअल पुस्तकालय का चलन बढ़ा है। जहां पर पुस्तकों को तब्दील कर लंबे समय तक संरक्षित रखने का आधुनिकतम प्रयोग में लाया जा रहा है। जिसके अंदर विविध पुस्तकालय उपकरणों, अनुवाद संसाधनों आधुनिकतम तकनीकी के प्रयोग द्वारा ज्ञान को संरक्षित रखने का प्रयत्न भी जोर-शोर से किया जा रहा है। जिसमें AI अर्थात कृत्रिम बुद्धि का उपयोग करके ज्ञान को आधुनिकतम तरीके से उपयोग किया जा रहा है। जिससे अगली पीढ़ी को सम्यक लाभ मिल सके और वह अपने जीवन को तथा मानवीय विकास को गति दे सके। इस संदर्भ में भारतीय परंपरा विशेष रूप से अपना योगदान दिया है साहित्य के क्षेत्र में, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में, काल गणना के

क्षेत्र में, ब्रह्मांड गतिकी के क्षेत्र में, सृष्टि विज्ञान के क्षेत्र में, चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में तथा व्यवहारिक ज्ञान के क्षेत्र में विश्व के लिए अभूतपूर्व उदाहरण प्रस्तुत करता है।

भारतीय परिदृश्य में ज्ञान के मुख्य स्रोत गुरुकुल में गुरु, पुस्तकालय एवं वृद्ध जन अर्थात ज्ञानी व्यक्ति जैसे दादा-दादी, नाना-नानी, काका-काकी तथा परिस्थिति जहां से व्यक्ति देख कर, सुनकर, अनुभव कर अपने ज्ञान को समृद्ध करता है। महाभारत में सीखने के चार प्रकार बताएँ गए हैं।

आचार्य पादमादत्ते पादम शिष्यस्वमेधया ।

पादम सब्रह्मचारीभि पादम कालक्रमेण ही।

अर्थात गुरु से, प्रतिभा से, साथियों से और समय से व्यक्ति सीखता है। व्यक्ति आवश्यक एवं अनावश्यक तथ्यों को अपनी आवश्यकता अनुसार उक्त चारों प्रकार से सीखता है। गुरु अर्थात शिक्षक या ज्ञानवान व्यक्ति अपने अनुभव एवं ज्ञान का संचार शिष्यों में एवं समाज में अर्थात विश्व कल्याण के लिए उक्त क्रियाओं के संपादान से करते हैं।

मुख्य शब्द- गुरु शिष्य परंपरा, नालंदा एवं तक्षशिला विश्वविद्यालय, भोजपत्र, तालपत्र, ताम्रपत्र शिलालेख, स्तंभलेख।

The Role of Sanskrit Libraries in Digital Environment: Future Prospects and Challenges

Vikramjeet

Assistant Librarian

Central Sanskrit University,

Vedavyas Campus, Kangra (Himachal Pradesh)

vikramjeet@csu.co.in

Mobile No: 88918-49504

Abstract

This paper explores the crucial role of Sanskrit libraries in the digital landscape, focusing on their potential for future development and the challenges they face. By examining the current state of Sanskrit libraries in the digital landscape, this study aims to shed light on the importance of preserving and promoting Sanskrit literature through digital platforms. Additionally, it highlights the obstacles that need to be overcome to ensure the successful integration of Sanskrit libraries into the digital environment.

Keywords*: Sanskrit, Sanskrit Libraries, Future Prospectus, Digital Environment.*

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ने श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), पूर्व में श्री लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली की स्थापना शास्त्रों के पारम्परिक ज्ञान, शास्त्रों की व्याख्या, आधुनिक शास्त्रीय विद्या में अध्यापकों के उचित प्रशिक्षण और आधुनिक परिप्रेक्ष्य में शास्त्रों को बढ़ावा देने के लिये की गई है। श्री लाल बहादुर शास्त्री जी इस संस्था के प्रेरणास्त्रोत रहे, उस समय की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने 2 अक्टूबर 1966 को यह घोषणा की थी कि इस विद्यापीठ को श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के नाम से पुकारा जाए। इसके लिए एक अलग से सोसायटी की स्थापना की गई और भारत सरकार ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा इस संस्था को प्रायोजित सोसायटी के रूप में दर्ज किया।

विद्यापीठ को 1987 में एक मानित विश्वविद्यालय के रूप में माना गया और यह नवम्बर, 1991 को पूरी तरह कार्यरत हुआ। इसको विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अनुदान के साथ अनुदान आयोग के नियमों तथा कानूनों के अनुसार शासित किया गया। भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी का दृष्टिकोण था कि इस संस्था को ऐसी केन्द्रीय संस्था बनाया जाये, जहां न केवल भारत अपितु चारों ओर से संसार के छात्र एवं विद्वान् आयें और यहाँ संस्कृत का अध्ययन एवं अध्यापन करें, संस्कृत में शोधकार्य करें, ताकि यह विद्यापीठ भारत की राजधानी में एक आदर्श संस्था बनकर उभरे। जैसा कि भारत सरकार ने अन्य भाषाओं के विकास हेतु विश्वविद्यालयों की स्थापना की है उसी प्रकार देश में संस्कृत के अध्येताओं की मांगों को पूरा करने के लिए राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संस्कृत के विद्वानों को एक मंच प्रदान करने के लिए यह अनुभव किया कि राजधानी में केन्द्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना की जानी चाहिए। तदनुसार अप्रैल 2020 में माननीय यशस्वी प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रयास से इसे मानित विश्वविद्यालय से केन्द्रीय विश्वविद्यालय बनाया गया।

अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी हेतु समिति का विवरण

प्रो. मुरली मनोहर पाठक, कुलपति	संरक्षक

आयोजन समिति

1) प्रो. प्रेम कुमार शर्मा	अध्यक्ष
2) श्री संतोष कुमार श्रीवास्तव	सदस्य
3) डॉ टी. एन गिरि	सदस्य
4) प्रो. शिवशंकर मिश्र	सदस्य
5) प्रो. विष्णुपद महापात्र	सदस्य
6) प्रो. देवेन्द्र मिश्र	सदस्य
7) श्री अजय कुमार टण्डन	सदस्य
8) डॉ श्रीमती कान्ता	सदस्य
9) श्री रमाकान्त उपाध्याय	सदस्य
10) श्री बनवारी लाल वर्मा	सदस्य
11) श्री राजेश कुमार पाण्डेय	संयोजक
12) डॉ श्रीमती सविता राय	सह संयोजक

परामर्श दात्री समिति

1. प्रो. भागीरथी नंद	अध्यक्ष
2. प्रो. शीतला प्रसाद शुक्ल	सदस्य
3. प्रो. श्रीमती कल्पना जैन	सदस्य
4. प्रो. सुजाता त्रिपाठी	सदस्य
5. प्रो. मारकण्डेय नाथ तिवारी	सदस्य
6. प्रो.एम जय कृष्णन	सदस्य
7. प्रो. सुंदर नारायण झा	सदस्य
8. प्रो. दयाल सिंह	सदस्य
9. डॉ श्रीमती तमन्ना कौशल	सदस्य
10. डॉ श्रीमती कामक्षम्मा	सदस्य
11. श्री राजेश कुमार पाण्डेय	संयोजक

क्रय समिति

1) प्रो. जवाहर लाल	अध्यक्ष
2) प्रो. कुलदीप कुमार	सदस्य
3) डॉ श्रीमती सविता राय	सदस्य
4) डॉ सुरेन्द्र महतो	सदस्य
5) डॉ अजय कुमार	सदस्य
6) श्री राकेश काण्डपाल	सदस्य

7) डॉ. नवीन राजपूत	संयोजक

प्रकाशन समिति

1) प्रो. जयकान्त सिंह शर्मा	अध्यक्ष
2) प्रो. विष्णुपद महापात्र	सदस्य
3) प्रो. विनोद शर्मा	सदस्य
4) प्रो. जगदेव शर्मा	सदस्य
5) डॉ. अभिषेक तिवारी	सदस्य
6) डॉ परमेश शर्मा	सदस्य
7) डॉ विजय कुमार	सदस्य
8) डॉ. ज्ञानधर पाठक	सदस्य

स्वागत समिति

१) प्रो. पीयूषकान्त दीक्षित	**अध्यक्ष**
२) प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी	**सदस्य**
३) प्रो. सदन सिंह	**सदस्य**
४) प्रो. यशवीर सिंह	**सदस्य**
५) प्रो श्रीमती रचना मोहन वर्मा	**सदस्य**
६) प्रो. हनुमान प्रसाद मिश्र	**सदस्य**
७) श्री राजेश कुमार पाण्डेय	**सदस्य**
८) श्रीमती सुषमा डेमला	**सदस्य**
९) श्री प्रमोद चतुर्वेदी	**सदस्य**
१०) श्री सुच्चा सिंह	**सदस्य एवं संयोजक**

आवास एवं भोजन समिति

1) प्रो.जवाहर लाल	अध्यक्ष
2) प्रो. अरविन्द कुमार	सदस्य
3) डॉ श्रीमती पिन्की मलिक	सदस्य
4) डॉ सौरभ दूबे	सदस्य
5) श्री मंजीत सिंह	सदस्य
6) श्री धर्मेंद्र	**सदस्य**
7) श्री जयकृष्ण कमिला	सदस्य
8) श्री बलराम सिंह	सदस्य

यातायात समिति

1) प्रो. विनोद कुमार शर्मा	अध्यक्ष
2) डॉ शिवदत्त आर्य	सदस्य
3) डॉ जितेन्द्र	सदस्य

4)	डॉ श्रीमती सुमिता त्रिपाठी	सदस्य
5)	श्री विपिन कुमार त्रिपाठी	सदस्य
6)	श्री ओ. पी. कौशिक	सदस्य
7)	श्री शशि भूषण शुक्ल	सं संयोजक

पंजीयन एवं प्रमाण पत्र व्यवस्था समिति

1)	डॉ श्रीमती सविता राय	अध्यक्ष
2)	डॉ अजय कुमार	सदस्य
3)	डॉ श्रीमती भारती कौशल	सदस्य
4)	डॉ श्रीमती वंदना शुक्ला	सदस्य
5)	श्री सुनील कुमार मिश्र	सदस्य
6)	श्रीमती सौम्या राय	स. संयोजक

तकनीकी समिति

1) श्री अंजनी कुमार
2) श्री ज्ञानचन्द शर्मा
3) श्री नरेन्द्र पाल
4) श्रीमती सन्ध्या सिंह
5) श्री सचिन राय
6) श्री जीवन जोशी
7) श्री ईश्वर
8) श्री कुलदीप
9) श्री ओमकेश्वर तिवारी

प्रतिलिपि :

1. समस्त संकाय प्रमुख एवं विभागाध्यक्ष
2. समिति के सभी महानुभाव
3. कुलपति के निजी सचिव
4. उपकुलसचिव वित्ताधिकारी
5. अधिशासी अभियन्ता/ सहायक अभियन्ता
6. संगणक केन्द्र - संबंधित सूचना को वेबसाइट पर प्रदर्शित करने हेतु
७. संबंधित फाईल

संगोष्ठी के विषय में / About the Seminar

The two-day International Seminar will bring forth many ideas and dimensions to Sanskrit universities regarding promoting quality education and research per the changing dynamics of the global education scenario. It will open new vistas for the Sanskrit Libraries towards better and more effective knowledge management through optimum technology intervention. A galaxy of speakers from the Sanskrit Education and Library and Information Science field will inspire and enlighten the participants. A unique confluence of scholars and their deliberations in the seminar will mark a new dawn towards the way knowledge is created, communicated and conserved.

संगोष्ठी के मुख्य विषय / Theme of the Seminar

संस्कृतविश्वविद्यालय-पुस्तकालययोः परिप्रेक्ष्ये ज्ञानसर्जन-संचार-संरक्षणेषु नवोन्मेषी दृष्टिः

संस्कृत विश्वविद्यालय एवं पुस्तकालयों के परिप्रेक्ष्य में ज्ञान सृजन, संचार एवं संरक्षण में नवोन्मेषी दृष्टि।

Innovative approach in knowledge creation, communication, and conservation: Prospectives from Sanskrit universities and libraries.

उप विषय / Sub-theme

1. भारतीयज्ञानपरम्परा
   भारतीय ज्ञान परम्परा
   Indian Knowledge System
2. संस्कृतधरोहराणां संरक्षणं तदुपायश्च
   संस्कृत धरोहर का संरक्षण एवं रख-रखाव
   Conservation and Preservation of Sanskrit Heritage
3. राष्ट्रियशिक्षानीतीनां परिप्रेक्ष्ये संस्कृतशिक्षा, अनुसन्धानं, पुस्तकालयश्च
   राष्ट्रीय शिक्षा नीति के परिप्रेक्ष्य में संस्कृत शिक्षा, शोध एवं पुस्तकालय
   National Education Policy (NEP) and Prospectives of Sanskrit Education, Research and Libraries
4. संस्कृतपुस्तकालयेषु तकनीक्याः समावेशनम्
   संस्कृत पुस्तकालयों में तकनीकी अन्तर्वेशन
   Technology Inclusions for Sanskrit Libraries
5. संस्कृतविश्वविद्यालये अनुसन्धान-प्रकाशनयोः परिप्रेक्ष्ये नैतिकता
   संस्कृत विश्वविद्यालय में शोध एवं प्रकाशन के परिप्रेक्ष्य में नैतिकता
   Reference Management, Research and Publication Ethics in Sanskrit Universities
6. संस्कृतपुस्तकालयेषु आन्तर्जालिकप्रक्रिया-संसाधनयोः समुपादेयता भाविरूपरेखा च
   संस्कृत पुस्तकालयों के नेटवर्किंग, संसाधन साझेदारी एवं भविष्यगत रूपरेखा
   Networking, Resource Sharing and Future Prospects for Sanskrit Libraries

शोधपत्र प्रस्तुत करने के लिए दिशानिर्देश / Guidelines for Submission of Paper

Original contributions/research papers based on the theme and sub-theme of the seminar are invited in English/Sanskrit/Hindi. The paper strictly adheres to the following guidelines-

For Papers in the English language

1. The length of the paper: 3000-5000-word limit, including abstract and references.
2. Following the title, the author's names, affiliations, and contact details should be arranged according to their original contributions to the article. There must be an email address with the corresponding author and an asterisk superscript with his name.

3. The abstract should briefly summarise the study's objective, methodology, findings and outcome and should be within 500 words. Please use 4-5 keywords based on the theme of the paper.
4. Format of the paper: MS Word, Times New Roman. 14-point fonts for the title, heading, and sub-heading. 12-point fonts for text. Tables and figures should be aligned centrally in the text appropriately.
5. APA reference style should be used for in-text and endnote references.
6. Paper must accompany a declaration that it is the original contribution of the author(s) and not published earlier or submitted elsewhere for publication.
7. The editorial committee will review the submitted paper, and necessary modifications can also be made if deemed required by the committee.
8. Please submit a similarity check certificate along with the research paper. Only those papers which are plagiarism-free per the guidelines of the UGC and are presented in the seminar will be incorporated into the proceedings.
9. A reputed publisher will publish the proceedings with an ISBN.
10. Full paper can be submitted at: is2023.lnsu@gmail.com

संस्कृत एवं हिन्दी भाषा में शोध पत्र हेतु / For Papers in Sanskrit and Hindi Language

The participants who want to submit their papers in Hindi/Sanskrit language must use Unicode-compliant font only for preparing their papers. Please follow the rest of the guidelines as illustrated above.

संगोष्ठी के लिए पंजीकरण एवं भुगतान प्रक्रिया: / Registration and Payment Process for the Seminar

The participant must fill out the registration form with all the requisite details; the link to the form is below. A screenshot of the payment transaction details towards registration for the seminar must be attached along with the form, failing which registration for the seminar will be considered incomplete. The participant is requested to pay the registration fees per their categories, as illustrated below.

संगोष्ठी के लिए ऑनलाइन भुगतान हेतु खाता विवरण / Account details for Online Payment for the Seminar

Payment can be transferred using the following details

Name of the University	: Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University
Bank Name	: Indian Bank
IFSC Code	: IDIB000M089
Account Number	: 405044278
Branch	: Mehrauli Road, 7 S J S, Sansanwal Marg, Katwaria Sarai, Institutio nal Area, New Delhi-110 016

Prof. Murlimanohar Pathak
Vice Chancellor
SLBSNSU, New Delhi

Prof. Shrinivasa Varakhedi
Vice Chancellor
CSU, New Delhi

Prof. Paras Nath
Dean
SINU, Honiara

Dr. Don Karunanayake
Director of Libraries
Department of Library &
Information Systems, SINU

Prof. Bishnupada Mahapatra
Librarian (I/C)
SLBSNSU, New Delhi

Chairman

Shri Rajesh Kumar Pandey
Assistant Librarian
SLBSNSU, New Delhi

Organising Secretary

Dr. Savita Rai
Assistant Professor
SLBSNSU, New Delhi

Co- Organising Secretary

कार्यक्रम का स्थान / Venue of the Seminar

Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University
B-4, Qutab Institutional Area
New Delhi-110016

संगोष्ठी स्थल तक कैसे पहुंचें / How to Reach the Seminar Venue:

SLBS National Sanskrit University is well-connected with all the Airports, Railway Stations, and Bus Terminus of New Delhi/Delhi. The nearest Metro Stations of the University are Munirika /R.K. Puram/ Huaz Khas & Malviya Nagar which are around 2-4 km away.

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

नव देहली-110016